दज्जाल के विषय की हदीसें

और समकालीन मानचित्रों द्वारा उनका स्पष्टीकरण

लेखक

डॉक्टर अब्दुल-मुहसिन बिन मुहम्मद अल-क़ासिम
इमाम व ख़तीब मस्जिद-ए-नबवी शरीफ़

दज्जाल के विषय की हदीसें

और समकालीन मानचित्रों द्वारा उनका स्पष्टीकरण

किताब डाउनलोड करने हेतु कोड को स्कैन करें

a-alqasim.com

दज्जाल के विषय की हदीसें

और समकालीन मानचित्रों द्वारा उनका स्पष्टीकरण

लेखक

डॉक्टर अब्दुल मुहसिन बिन मुहम्मद अल-क़ासिम

इमाम व ख़तीब: मस्जिद-ए-नबवी शरीफ़

بسم الله الرحمن الرحيم

प्रस्तावना

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो जो सारे ब्रह्मांड का प्रभु है, रहमत और शांति हो हमारे प्रिय पैग़ंबर मुहम्मद पर, तथा आपके परिवार और सभी साथियों पर।

अम्मा बा'द:[(1)]

निश्चिंत ही क़यामत का मामला बहुत बड़ी चीज़ है, पवित्र प्रभु ने अपनी दया से क़यामत की निशानियाँ निर्धारित की हैं; ताकि सृष्टि उसकी ओर पलटे और अंतिम पूछ-ताछ के लिए तैयार हो जाए, जैसे उसने प्रलय की निशानियाँ निर्धारित की हैं; वैसे ही उन निशानियों को पहचानने के लिए भी कुछ संकेत रखे हैं। उन्ही संकेत वाली निशानियों में से एक: मसीह दज्जाल (Antichrist) का उद्भव है।

उसके बड़े फ़ितने (प्रलोभन) के कारण ही; प्रत्येक नबी ने अपने समुदाय को उसके बारे में चेतावनी दी है, पैग़ंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) ने भी उसके बारे में चेतावनी दी है और स्पष्ट संकेतों के साथ उसके मामले को उजागर किया है।

उसके फ़ितने की खतरनाकी के कारण ही, मैंने मसीह दज्जाल के बारे में बताई गई प्रामाणिक हदीसों को एकत्र किया है, अंजान शब्दों की व्याख्या की है, तथा उनमें उल्लिखित स्थानों को चित्रों व मानचित्रों के माध्यम से स्पष्ट किया है, साथ ही उससे मुक्ति के साधनों का भी उल्लेख किया है; ताकि मुस्लिम व्यक्ति निश्चित रूप से उसे पहचान कर उससे बच सके और उसके फ़ितने से दूर रह सके। मैंने इस पुस्तक को: "**दज्जाल के विषय की हदीसें और समकालीन मानचित्रों द्वारा उनका स्पष्टीकरण**" का नाम दिया है।

मैं अल्लाह से प्रार्थना करता हूँ कि वह इस पुस्तक को लाभकारी बनाए और हमें मसीह दज्जाल के फ़ितने से बचाए।

---

(1) इस वाक्य को अल्लाह की प्रशंसा और नबी पाक पर सलाम के बाद मुद्दे की बात पर आने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

अल्लाह हमारे पैग़ंबर मुहम्मद को, तथा उनके परिवार और उनके सभी साथियों को आशीर्वाद और शांति दे।

डॉक्टर अब्दुल मुहसिन बिन मोहम्मद अल-क़ासिम

इमाम व ख़तीब मस्जिद-ए-नबवी शरीफ़

मैंने इसे रजब महीने की पच्चीसवीं तारीख को

वर्ष चौदह सौ तैंतालीस हिजरी में संपन्न किया

पुस्तक की रूपरेखा

मैंने इस पुस्तक को निम्न लिखित प्रकार पर कई विषयों में बाँटा है:

प्रथम विषय: मसीह दज्जाल का नाम।

दूसरा विषय: मसीह दज्जाल नाम रखने का कारण।

तीसरा विषय: मसीह दज्जाल के विषय में हदीसों की प्रमाणिकता।

चौथा विषय: मसीह दज्जाल कयामत के बड़े संकेतों में से एक है।

पांचवाँ विषय: मसीह-दज्जाल के विरुद्ध चेतावनी

छटा विषय: सहाबा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) का मसीह दज्जाल के फ़ितने से डरना

सातवाँ विषय: मसीह-दज्जाल के लक्षण

आठवाँ विषय: मसीह दज्जाल का सच।

नवाँ विषय: मसीह दज्जाल की दुर्बलता।

दसवाँ विषय: मसीह दज्जाल की वर्तमान स्तिथि।

ग्यारहवाँ विषय: मसीह दज्जाल के उद्भव के संकेत।

बारहवाँ विषय: मसीह दज्जाल कब निकलेगा?

तेरहवाँ विषय: मसीह दज्जाल के उद्भव का कारण।

चौदहवाँ विषय: मसीह दज्जाल के उद्भव का स्थान।

पंद्रहवाँ विषय: मसीह दज्जाल के उद्भव के समय लोगों की स्तिथि।

सोलहवाँ विषय: पृथ्वी में मसीह दज्जाल के भ्रमण की तीव्र गति।

सत्तरहवाँ विषय: मसीह दज्जाल मक्का और मदीने में प्रवेश नहीं करेगा।

अट्ठारहवाँ विषय: मदीने में मसीह दज्जाल का आतंक प्रवेश नहीं करेगा।

उन्नीसवाँ विषय: मदीने के निकट का वह स्थान जहाँ पर मसीह दज्जाल उतरेगा।

बीसवाँ विषय: धरती में मसीह अज्जल के रहने की अवधि।

इक्कीसवाँ विषय: मसीह दज्जाल का फ़ितना।

बाइसवाँ विषय: मसीह दज्जाल के फ़ितने में हिकमत।

तेइसवाँ विषय: मसीह दज्जाल के अनुसरण का हुक्म।

चौबीसवाँ विषय: मसीह दज्जाल के विरुद्ध सबसे कठोर लोग।

पच्चीसवाँ विषय: मसीह दज्जाल से बचाव के साधन।

छब्बीसवाँ विषय: मसीह दज्जाल का वध

सत्ताइसवाँ विषय: दज्जाल के विषय की हदीसों में वर्णित स्थानों के विश्लेषक मानचित्र।

❊❊❊

मसीह दज्जाल का नाम

मसीह दज्जाल के नाम उसके प्रसिद्ध दुर्गुणों के आधार पर रखे गए है, उसके चार नाम हैं।

1- मसीह दज्जाल।

पैग़ंबर (उन पर शांति हो) ने फ़रमाया: "मसीह दज्जाल के फ़ितने से अल्लाह की शरण मांगा करो।" (सही मुस्लिम[1])

2- पथभ्रष्टता का मसीहा।

पैग़ंबर (उन पर शांति हो) ने फ़रमाया: "पथभ्रष्टता का मसीहा पूरब की ओर से निकलेगा।" (सही इब्ने-हिब्बान[2])

3- काना दज्जाल।

पैग़ंबर (उन पर शांति हो) ने फ़रमाया: "काना दज्जाल अर्थात: पथभ्रष्टता का मसीहा पूरब की ओर से ऐसे समय निकलेगा जब लोगों में मतभेद और विभाजन होगा।" (सही इब्ने-हिब्बान[3])

4- झूठा काना।

पैग़ंबर (उन पर आशीर्वाद व शांति हो) ने फ़रमाया: "जितने पैग़ंबर भेजे गए सब ने अपने समुदाय को झूठे काने से डराया है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम[4])

---

(1) पुस्तक: मस्जिदें और नमाज़ की जगहें, अध्याय: नमाज़ में जिन चीजों से अल्लाह की शरण माँगी जाएगी, संख्या (588), श्री अबू-हुरैरा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(2) पुस्तक: इतिहास, अध्याय: पैग़ंबर (उन पर आशीर्वाद व शांति हो) द्वारा उम्मत में होने वाले फ़ितनों और घटनाओं की भविष्यवाणी, संख्या (6812), श्री अबू-हुरैरा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(3) पिछला संदर्भ।

(4) सही बुखारी, पुस्तक: फ़ितने, अध्याय: दज्जाल का उल्लेख, संख्या (7131), व सही मुस्लिम, पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल, उसके लक्षण और उसके साथ जो होगा उसका उल्लेख, संख्या (2933), श्री अनस बिन मालिक (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

उसे मसीख दज्जाल नाम देना सही नहीं है।

श्री इब्ने-अब्दुल-बर्र (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "हदीस के कुछ वर्णनकर्ता दज्जाल को "मिसीह" कहते हैं।

और कुछ मसीख बोलते हैं।

जबकि ये सब विद्वानों के अनुसार ग़लत है"[1]।

❋❋❋

(1) अल-तमहीद (14/188)।

मसीह दज्जाल नाम रखने का कारण

दज्जाल का नाम दो शब्दों से बना है:

उनमें से एक: "मसीह" है और दूसरा: "दज्जाल" है, प्रत्येक शब्द द्वारा उसे नामित करने के कारण में भिन्न अर्थ है।

पहला: "मसीह" नाम देने का कारण:

1- धरती को छूने अर्थात उसका चक्कर लगाने तथा मक्का व मदीने को छोड़ कर पृथ्वी के समस्त नगरों में प्रवेश करने के कारण उसे यह नाम दिया गया है।

2- एक कथन के अनुसार चूंकि उसकी एक आंख धंसी होगी; इसलिए उसे मसीह कहा जाता है [١]।

दूसरा: "दज्जाल" नाम का कारण:

1- क्योंकि वह महा झूठा होगा, अत: दज्जाल लोगों के सामने बहुत अधिक झूठ बोलेगा।

2- एक कथन के अनुसार सत्य छुपाने और लोगों को भ्रमित करने के कारण उसे दज्जाल नाम दिया गया है [٢]।

उसे दज्जाल की उपाधि इस लिए दी गई है; ताकि वह पैग़ंबर ईसा मसीह (उन पर शांति हो) से अलग प्रतीत हो।

❋❋❋

(1) अल-तमहीद (14/188), तफ़सीर अल-क़ुरतुबी (4/89)।

(2) शर्ह अल-सुन्नह (15/27), कश्फ़ अल-मुश्किल मिन हदीस अल-सहीहैन (1/382), फ़त्ह अल-बारी: इब्ने-हजर (13/91)।

मसीह दज्जाल के विषय में हदीसों की प्रमाणिकता

मसीह दज्जाल के बारे में वर्णित हदीसें सही तथा मुतवातिर हैं, -अर्थात: यह इतने अधिक वर्णन-मार्गों से आई हैं, कि सामान्य रूप से इसके वर्णनकर्ताओं की झूट पर सहमति असंभव है-, जो इनका इंकार करता है उसके पास कोई तर्क नहीं है, श्री इब्ने-कसीर (मृत्यु: 774 हिजरी) (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "जहाँ तक केवल दज्जाल का उल्लेख करने वाली हदीसों का सवाल है तो वे बहुत ही अधिक हैं, वे इतनी ज़्यादा तादाद में हैं कि सही, हसन तथा मुसनद हदीसों की किताबों में बिखरे होने और उसके वर्णनकर्ताओं की अत्यधिक संख्या के कारण उनको गिनना मुश्किल है"[1]।

श्री इब्ने-कसीर (अल्लाह उन पर दया करे) ने यह भी कहा है: "कई संप्रदायों जैसे खवारिज, जहमिया और कुछ मु'तज़िला ने दज्जाल के आने को पूरी तरह नकार दिया है, उन्होंने इस विषय की हदीसों को अस्वीकार कर दिया, हालांकि ऐसा कर के वो कुछ न कर सके, इस तरह वे विद्वानों के दायरे से बाहर चले गए, क्यूंकि उन्हों ने उन सही सूचनाओं को नकारा है जो अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) से अनेक वर्णन-मार्गों से आई हैं"[2]।

श्री कत्तानी (मृत्यु: 1345 हिजरी) (अल्लाह उन पर दया करे) (कहते हैं: "मसीह दज्जाल के आगमन के विषय में जो हदीसें आई हैं, कई विद्वानों का कहना है कि वे सहाबा की एक बड़ी संख्या से बहुत से वर्णन-मार्गों से वर्णित हैं जो सहाबा की भारी संख्या के मार्ग से आई हैं, श्री शौकानी की पुस्तक "अल-तौज़ीह"[3] में इस विषय पर सौ हदीसें हैं, ये हदीसें कई वर्ग की पुस्तकों; जैसे सही, मो'जम और मुसनद आदि में हैं। तवातुर[4] तो इन से कम हदीसों में भी प्राप्त हो जाता है, तो सोचो सारी हदीसों को एकत्रित करने के बाद क्या स्तिथि होगी? कुछ विद्वानों ने कहा है: दज्जाल के विषय की हदीसें कई खण्डों में आ सकती हैं, कई इमामों ने उन

---

(1) तफ़सीर इब्ने-कसीर (2/464)।

(2) अल-बिदाया व अल-निहाया (19/193)।

(3) अर्थात: "अल-तौज़ीह फ़ी तवातुर मा जाअ फ़ी अल-मह्दी अल-मुन्तज़र व अल-दज्जाल व अल-मसीह" नामी पुस्तक, वह पांडुलिपि में है, उसकी एक प्रति शैख हम्माद अंसारी (अल्लाह उन पर दया करे) के पुस्तकालय में है।

(4) तवातुर: हदीस के वर्णन मार्ग के हर भाग में वर्णनकर्ताओं की भारी संख्या, जिसके होते हुए उस हदीस की सच्चाई पर संदेह की गुंजाईश नहीं रहती।

सब हदीसों के लिए अलग से पुस्तकें लिखी हैं"[1]।

यदि कहा जाए कि: पवित्र क़ुरआन में दज्जाल का स्पष्ट रूप से उल्लेख क्यों नहीं किया गया?

इसके उत्तर में श्री इब्ने-कसीर (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा है: "क़ुरआन में दज्जाल के प्रति अवमानना के कारण स्पष्ट रूप से उसके नाम का उल्लेख नहीं किया गया है, क्योंकि वह मानव होते हुए भी देवत्व का दावा करेगा, वह मनुष्यता के बावजूद रचना में अपूर्ण होगा, उसकी स्थिति प्रभु की महिमा, महानता, गौरव और अपूर्णता से पवित्रता के बिल्कुल विपरीत है; इसलिए प्रभु के सामने उसका मामला इतना महत्वहीन है कि उसका उल्लेख भी नहीं किया जा सकता था, वह इतना नीच और अवमानना का पात्र है कि (कुरआन द्वारा) उसके दावे के मामले को प्रकाश में लाने और उससे चेताने को उचित नहीं समझा गया।

परन्तु पैग़ंबर गण को सर्वशक्तिमान प्रभु की ओर से इसकी आज्ञा मिल गई, अत: उन्होंने अपने समुदायों के आगे उसके विषय को उजागर किया और उन्हें उसके साथ मौजूद भ्रामक फ़ितनों, अस्थायी और दुर्बल चमत्कारों के प्रति चेतावनी दी।

इसलिए पैग़ंबर गण की सूचना और आदम-पुत्रों के सरदार, पवित्र लोगों के इमाम (अंतिम पैग़ंबर) से एक बड़ी संख्या द्वारा उस सूचना के वर्णन को पर्याप्त समझते हुए, महान क़ुरआन में अल्लाह की महिमा के आगे उसके नीच मामले का उल्लेख नहीं किया गया, और उसके विषय की व्याख्या का भार प्रत्येक प्रतिष्ठित पैग़ंबर को सौंप दिया गया।

फिर अगर तुम कहो कि: क़ुरआन में फिरऔन का उल्लेख भी तो किया गया है, जबकि उसने भी देवत्व, झूठ और लांछन का अच्छा खासा दावा कर रखा था, उसका कथन था:

﴿فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ ٱلْأَعْلَىٰ﴾

मैं तुम सब का सर्वोच्च प्रभु हूँ। (अल-नाज़िआत: 24)

तो इसका उत्तर यह है की फिरऔन का विषय समाप्त हो चुका है, प्रत्येक ईमान वाले बुद्धिमान व्यक्ति के लिए उसका झूठ स्पष्ट हो चुका है, जबकि दज्जाल का मामला भविष्य में आने वाला है"[2]।

***

(1) नज़्म अल-मुतनासिर (228)।

(2) अल-बिदाया व अल-निहाया (19/197)।

मसीह दज्जाल कयामत के बड़े संकेतों में से एक है

कयामत के कुछ छोटे संकेत हैं और कुछ बड़े संकेत हैं, जब कयामत के बड़े संकेत प्रकट हो जाएंगे; तो क़यामत बर्पा हो जाएगी, कयामत के बड़े संकेतों में से एक: मसीह दज्जाल का निकलना है, इस विषय में वर्णित कुछ हदीसें इस प्रकार हैं:

1 - श्री हुजैफ़ा बिन उसैद ग़िफ़ारी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहते हैं: "अल्लाह के पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) हमारे सामने प्रकट हुए जबकि हम वार्तालाप कर रहे थे, तो आपने पूछा: आप लोग किस विषय पर चर्चा कर रहे हैं?

उन्होंने कहा: हम कयामत की चर्चा कर रहे हैं।

आप ने फ़रमाया: यह तब तक नहीं आएगी जब तक कि आप लोग उस से पहले दस संकेत नहीं देख लोगे।

फिर आपने (निम्न लिखित चीज़ों का) उल्लेख किया: धुआं, दज्जाल, विशेष जानवर, पश्चिम से सूर्योदय, श्रीमती मरयम के पुत्र श्री ईसा (उन पर शांति हो) का आसमान से उतरना, याजूज माजूज (गोग मागोग)।

तीन भूस्खलन: एक पश्चिम में, एक पूरब में और एक अरब उप-महाद्वीप में।

और सबके अंत में एक आग होगी, जो यमन देश से निकलेगी और लोगों को हांक कर एक मैदान में एकत्रित कर देगी। (सही मुस्लिम[1])

2 - अल्लाह के पैग़ंबर ने फ़रमाया: "तीन चीज़ें ऐसी हैं जब वे प्रकट हो जाएं तो

﴿لَا يَنفَعُ نَفْسًا إِيمَٰنُهَا لَمْ تَكُنْ ءَامَنَتْ مِن قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِىٓ إِيمَٰنِهَا خَيْرًا ۗ﴾

फिर किसी ऐसे व्यक्ति को उसका ईमान कुछ लाभ न पहुँचाएगा जो पहले ईमान न लाया हो या जिसने अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई हो। (अल-अनआम: 158)

वो तीन चीज़ें: पश्चिम से सूर्योदय, दज्जाल और धरती का विशेष जानवर हैं।" (सही मुस्लिम[2])

---

(1) पुस्तक: फ़ितनों और कयामत की निशानियाँ, अध्याय: क़यामत से पहले की निशानियाँ, संख्या (2901)।

(2) पुस्तक: ईमान, अध्याय: वह समय जब ईमान स्वीकार नहीं किया जाएगा, संख्या (158), श्री अबू-हुरैरा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

मसीह-दज्जाल के विरुद्ध चेतावनी

दज्जाल के फ़ितने की गंभीरता के कारण ही, पैगम्बरों ने अपने समुदायों के सभी वर्गों को उस से सावधान किया था, इसी पद्धति पर चलते हुए विद्वान उसे दोहराते रहे और उस से सावधान करते रहे, इसका स्पष्टीकरण आगे आ रहा है:

1 - पैग़ंबर गण (उन पर शांति हो) अपने समुदायों को मसीह दज्जाल के विरुद्ध चेतावनी देते थे, अल्लाह के अंतिम दूत (उन पर अल्लाह की शांति व कृपा हो) ने कहा: "कोई पैग़ंबर ऐसा नहीं गुज़रा जिसने अपने समुदाय को झूठे काने (दज्जाल) के बारे में चेतावनी न दी हो, सचेत हो जाओ! वह काना होगा, जबकि तुम्हारा प्रभु काना नहीं है, दज्जाल की आंखों के बीच (क फ र) लिखा होगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) मुस्लिम ने कुछ इजाफ़ा वर्णन किया है: "जान लो कि तुम में से कोई भी व्यक्ति मरने मरने से पहले अपने शक्तिशाली प्रभु को नहीं देख सकता।"(1)

श्री इब्ने-हजर (उन पर अल्लाह की दया हो) (मृत्यु 852 हिजरि) ने कहा: "दज्जाल के विषय में घटित होने (और नष्ट हो जाने) के प्रमाणों की स्पष्टता के बावजूद, अल्लाह के रसूल ने अपने कथन: (वह काना है और अल्लाह काना नहीं है) में केवल इतने उल्लेख पर ही इसलिए बस किया है; क्योंकि कानापन एक मूर्त प्रभाव है जिसे विद्वान, आम आदमी और तर्कसंगत साक्ष्य की ओर निर्देशित न हो सकने वाले लोग भी समझ सकते हैं।

शारीरिक रूप से अपूर्ण होते हुए भी यदि वह प्रभुत्व का दावा करेगा, जबकि प्रभु अपूर्णता से बहुत ऊपर है; तो स्पष्ट हो जाएगा कि वह झूठा है।

इस कथन में सचेत किया गया है कि उसका प्रभुत्व का दावा झूठा होगा; क्योंकि सर्वशक्तिमान अल्लाह को देखना मृत्यु से पहले संभव नहीं है, जबकि दज्जाल (एंटीक्रिस्ट) अल्लाह होने का दावा करेगा और लोग उसे देख भी रहे होंगे।"(2)

---

(1) सही बुखारी, पुस्तक: जिहाद और सीरत, अध्याय: बच्चे पर इस्लाम को कैसे पेश किया जाएगा?, संख्या (3057), व सही मसूलिम, पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: इब्ने-सय्याद का उल्लेख, संख्या (2931), श्री इब्ने-उमर (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(2) फ़त्ह अल-बारी (13/96)।

2 - हमारे पैग़ंबर मुहम्मद (उन पर अल्लाह की कृपा व शांति हो) ने भी अपने समुदाय को दज्जाल से चेताया है, आपका कथन है: "मैं तुम सबको दज्जाल से डराता हूँ, कोई भी नबी ऐसा नहीं है जिसने अपने समुदाय को उससे न डराया हो, निस्संदेह पैग़ंबर नूह (उन पर शांति हो) ने अपनी कौम को दज्जाल से डराया था।

लेकिन मैं तुम्हें ऐसी बात बताऊंगा जो किसी नबी ने अपनी कौम को नहीं बताई, जान लो कि वह काना होगा, जबकि धन्यवान शक्तिशाली अल्लाह एक काना नहीं है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम[1])

श्री इब्ने-हजर (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "कहा गया है कि दज्जाल के काना होने की उपरोक्त चेतावनी हालांकि उसके झूट की पोल खोलने के लिए सब से स्पष्ट प्रमाण है, लेकिन फिर भी यह सूचना केवल अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की कृपा व शांति हो) द्वारा सामने लाई गई, इसका भेद यह है कि दज्जाल पूर्व में गुजरने वाली सारी उम्मतों को छोड़कर, केवल आप की उम्मत में निकलेगा।

हदीस इंगित करती है कि दज्जाल के इस उम्मत में उद्भव होने का ज्ञान अन्य उम्मतों को नहीं दिया गया था, ठीक ऐसे ही जैसे क़यामत के पुनरुत्थान के समय का ज्ञान किसी को नहीं दिया गया"[2]।

3 - अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की कृपा और शांति हो) ने दज्जाल के फ़ितने की महानता का उल्लेख करते हुए कहा: "आदम की रचना और क़यामत के आगमन के बीच दज्जाल (एंटीक्रिस्ट) से बड़ी कोई रचना नहीं है।" (सही मुस्लिम) एक वर्णन में है: "मसीह-दज्जाल से बड़ी कोई घटना नहीं है"।[3]

अर्थात्: आदम की रचना से लेकर क़यामत के दिन तक दज्जाल से बड़ा कोई फ़ितना नहीं है। क्यूंकि उसका फ़ितना और विपत्ति विशाल है, एवं उसका भ्रमजाल और परीक्षा गंभीर है[4]।

---

(1) सही बुखारी, पुस्तक: जिहाद और सीरत, अध्याय: बच्चे पर इस्लाम को कैसे पेश किया जाएगा?, संख्या (3057), सही मसूलिम, पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: इब्ने-सय्याद का उल्लेख, संख्या (2931), श्री इब्ने-उमर (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(2) फ़त्ह अल-बारी (13/96)।

(3) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल के विषय में शेष हदीसें, संख्या (2946), श्री इमरान बिन हुसैन (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(4) मिरक़ात अल-मफ़ातीह (8/3452)।

श्री क़ाज़ी इयाज़ (अल्लाह उन पर दया करे) (मृत्यु 544 हिजरी) ने कहा: "अल्लाह के रसूल के कथन कि "दज्जाल से बड़ी कोई (सृष्टि) नहीं है" से उसके मामले की विशालता और फ़ितने की महानता प्रतीत होती है, शरीर की महानता नहीं; यही अधिक स्पष्ट है।

यह भी हो सकता है कि इस से शरीर की महानता की ओर संकेत हो[1]।

4 - अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की कृपा और शांति हो) नमाज़ के दौरान दज्जाल के फ़ितने से अल्लाह की शरण माँगते थे। श्रीमती आइशा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "मैंने अल्लाह के दूत को नमाज़ के दौरान दज्जाल के फ़ितने से अल्लाह की शरण माँगते हुए सुना।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम[2])

5 - अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की कृपा व शांति हो) ने अपने समुदाय को दज्जाल से अल्लाह की शरण लेने का आदेश दिया, आप ने कहा: "अल्लाह के दण्ड से अल्लाह की शरण माँगो, कब्र की पीड़ा से अल्लाह की शरण माँगो, मसीह दज्जाल के फ़ितने से अल्लाह की शरण माँगो और जीवन व मृत्यु की परीक्षाओं से अल्लाह की शरण माँगो"। (सही मुस्लिम[3])

6 - विद्वान समय-समय पर मसीह दज्जाल की याद दिलाने का आदेश देते थे; ताकि उसके फ़ितने से सावधान रहें, श्री सफ़्फ़ारीनी (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "प्रत्येक विद्वान को चाहिए कि बच्चों, महिलाओं और पुरुषों के बीच मसीह दज्जाल के बारे में वर्णित हदीसों को फैलाए, विशेष रूप से हमारे समय में जबकि फ़ितने सर चढ़कर बोलने लगे हैं, परीक्षाएं प्रचुर मात्रा में बढ़ चुकी हैं और सुन्नत के चिह्न मिट चुके हैं"[4]।

❋❋❋

(1) इकमाल अल-मूलिम (8/504)।

(2) सही बुखारी, पुस्तक: अज़ान, अध्याय: सलाम से पहले प्रार्थना करना, संख्या (832), व सही मुस्लिम, पुस्तक: मस्जिदें और नमाज़ की जगहें, अध्याय: नमाज़ में जिन चीजों से अल्लाह की शरण माँगी जाएगी, संख्या (587), श्री अबू-हुरैरा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(3) पुस्तक: मस्जिदें और नमाज़ की जगहें, अध्याय: नमाज़ में जिन चीजों से अल्लाह की शरण माँगी जाएगी, संख्या (588), श्री अबू-हुरैरा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(4) लवामि-उल-अनवार अल-बहिय्या (2/106)।

सहाबा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) का मसीह दज्जाल के फ़ितने से डरना

सहाबा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) मसीह दज्जाल के फ़ितने के भय के कारण से उसकी चर्चा करते थे, निम्न में उसके प्रमाण दिए जा रहे हैं:

1- श्री अबू-सईद खुदरी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "हम अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की कृपा व शांति हो) के साथ बारी-बारी जाते थे, हम आप के पास रात गुज़ारते; आप को कोई ज़रूरत होती, या रात के दौरान कोई मामला पेश आता, तो हमें भेज देते, इस प्रकार पुण्य चाहने वाले लोगों और बारी लगाने वालों की संख्या बढ़ जाती।

हम बातें कर रहे थे कि अचानक अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की कृपा व शांति हो) रात में हमारे पास आए और कहा: यह धीमी बातचीत क्या है? क्या मैंने तुम्हें धीमी बातचीत से मना नहीं किया था?

कहते हैं: हमने कहा: हे अल्लाह के पैग़ंबर! हम अल्लाह के दरबार में पश्चाताप करते हैं, हम तो बस मसीह दज्जाल से भयभीत हो कर उसी के विषय पर चर्चा कर रहे थे।

आप ने कहाः क्या मैं तुम्हें न बताऊँ कि मैं तुम्हारे विषय में मसीह से भी अधिक किस बात से डरता हूँ?

कहते हैं : हमने कहा: क्यों नहीं.

आप ने कहा: छिपा हुआ शिर्क[1], अर्थात: एक आदमी दूसरे आदमी के स्थान को निगाह में रखते हुए काम करे"। (मुसनद अहमद[2])

2 – श्री नव्वास बिन समआन (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहते हैं: "अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की कृपा व शांति हो) ने एक दिन सुबह को दज्जाल की इतनी अधिक चर्चा की, कि हमें लगने लगा वह यहीं कहीं खजूर के बाग़ के पास मौजूद होगा।

---

(1) अल्लाह के किसी गुण को किसी अन्य में मानना या पूजा का थोड़ा सा भी हिस्सा किसी अन्य के लिए प्रस्तुत करना इस्लाम में शिर्क कहलाता है, शिर्क् महापाप है जिसकी अल्लाह के यहाँ कोई माफी नहीं है।
(2) संख्या (11252)।

जब हम शाम में आपके पास आए, तो आपने हमारे ऊपर उसका स्पष्ट प्रभाव महसूस किया। अतः आप ने पूछा: क्या बात है?

हमने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल, आपने दज्जाल का ज़िक्र किया और उसकी इतनी अधिक चर्चा की और उसके फ़ितने को इतना भयानक दिखाया कि हम समझने लगे वह यहीं कहीं खजूर के बाग़ के पास मौजूद होगा।

यह सुन आपने कहा: "तुम्हारे विषय में दज्जाल के अलावा अन्य फ़ितनों ने मुझे चिंता में डाल रखा है, (जहाँ तक दज्जाल की बात है) यदि वह मेरे जीवनकाल में ही निकलता है, तो तुम्हारे स्थान पर मैं स्वयं उसका विरोध करूँगा।

और यदि वह मेरे जाने के बाद निकलता है, तो हर व्यक्ति स्वयं उसका विरोधी होगा। और अल्लाह हर मुस्लिम के लिए मेरा उत्तराधिकारी[1] है।" (सही मुस्लिम[2])

❋❋❋

(1) अर्थात: अल्लाह प्रत्येक मुस्लिम का संरक्षक और रक्षक है।

(2) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल, उसके लक्षण और उसके साथ जो होगा उसका उल्लेख, संख्या (2937)।

मसीह-दज्जाल के लक्षण

हदीसों में मसीह दज्जाल की विशेषताओं की व्याख्या आई है; ताकि ईमान वाला व्यक्ति उससे सावधान रहे, अबू अब्दुल्ला मुहम्मद अल-कुर्तुबी (अल्लाह उन पर दया करे) (मृत्यु 671 हिजरी) ने कहा: "नबी (उन पर अल्लाह की कृपा व शांति हो) ने इस प्रकार दज्जाल का वर्णन कर दिया है कि अब उसके विषय में किसी भी बुद्धिजीवी के लिए कोई उलझन शेष नहीं रही, उसके सभी गुण निंदनीय हैं और प्रत्येक सामान्य व्यक्ति के लिए भी स्पष्ट हैं, लेकिन इस के बाद भी अल्लाह ने जिनके लिए दुर्भाग्य का निर्णय ले लिया है; वह दज्जाल के झूठ और मूर्खता के दावे में उस का पालन करेंगे और सत्य व क़ुरआन-पाठ के प्रकाश का पालन करने से वंचित रहेंगे" [(१)]।, उसके लक्षण इस प्रकार हैं:

1 - विशाल शरीर वाला।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की कृपा व शांति हो) ने सहाबी तमीम दारी के कथन का वर्णन करते हुए कहा: "हम शीघ्रता से चल पड़े, यहाँ तक कि एक महल में प्रवेश कर गए, वहाँ हमने शारीरिक रूप से एक बहुत ही बड़ा मनुष्य देखा"। (सही मुस्लिम)

2 - वह लाल रंगत का पुरुष होगा, अर्थात: ऐसा सफ़ेद जो लाली लिए हुए हो।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की कृपा व शांति हो) आगे उनका कथन बयान करते हैं: "फिर में चारों ओर देखने लगा; वह क्या था! एक विशाल शरीर वाला लाल पुरुष।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

3 – आँख का काना; मानो उसकी आँख उभरा हुआ अंगूर है।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की कृपा व शांति हो) ने कहा: "दज्जाल अपनी दाहिनी आंख में अंधा होगा, मानो उसकी आँख एक उभरा हुआ अंगूर है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

और मुस्लिम के एक वर्णन में है: "दज्जाल अपनी बायीं आँख से काना होगा।"

श्री इब्ने-अब्द-अल-दाइम नुऐमी (अल्लाह उन पर दया करे) (मृत्यु 831 हिजरी) ने

(1) अल-तज़किरा फ़ी अहवाल अल-मौता व उमूर अल-आखिरह (1279)।

कहा: "वह हर चीज़ से काना होगा, बड़ा ही विक्षिप्त और दोषपूर्ण, दज्जाल की दोनों आंखें दोषपूर्ण होंगी: एक की शक्ति समाप्त हो चुकी होगी और दूसरी अपने उभार और दोष से ग्रस्त होगी"(1)।

श्री मुज़हिरी (अल्लाह उन पर दया करे) (मृत्यु 727 हिजरी) ने कहा: "अगर यह कहा जाए कि: इस तथ्य में क्या बुद्धिमत्ता है कि उसे काना बनाकर पैदा किया गया है?

तो उत्तर दिया जाएगा: क्योंकि यदि उसके अंदर काने पन के अतिरिक्त कोई और दोष होता; तो यह लोगों के लिए कानेपन की तरह स्पष्ट नहीं होता, या फिर इस लिए कि यह काना पन उसके झूठ और जादू को प्रमाणित करने वाला एक दृश्य संकेत होगा।

फिर अगर कहा जाए: अगर वह अंधा होता तो एक आंख वाला होने से अधिक स्पष्ट होता, भला फिर उसे अंधा क्यों नहीं बनाया गया?

तो कहा जाएगा: क्योंकि सर्वशक्तिमान अल्लाह यह निर्धारित कर चुका है कि वह उसके द्वारा कुछ लोगों को गुमराह करेगा, यदि वह अंधा होता; तो कैसे वह दूसरों को भटका और बहका पाता"(2)।

4 - उसकी अभिषिक्त आँख पर एक मोटी चमड़ी है जो दृष्टि को ढाक लेगी।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की कृपा व शांति हो) ने कहा: "निस्संदेह दज्जाल मिटी हुई आँख वाला होगा, जिस पर एक मोटी चमड़ी होगी"। (सही मुस्लिम)

5 - उसकी आंखों के बीच लिखा होगा: (क फ र), जिसका अर्थ है: काफिर (अविश्वासी) हर मुसलमान इसे पढ़ लेगा।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की कृपा व शांति हो) ने फ़रमाया: "निस्संदेह दज्जाल मिटी हुई आँख वाला होगा, उसकी आंखों के बीच 'काफिर' लिखा होगा फिर आपने उसका उच्चारण करके बताया (क फ र) हर मुसलमान उसे पढ़ लेगा"। (सही मुस्लिम)

6 - घने बालों वाला।

अल्लाह के पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की कृपा व शांति हो) कहते हैं: "दज्जाल बाईं आँख से काना होगा और घने बालों वाला होगा"। (सही मुस्लिम)

---

(1) अल-लामि अल-सबीह (10/27)।

(2) अल-मफ़ातीह फ़ी शर्ह अल-मसाबीह (5/409)।

7 - उसके बाल अत्यधिक घुंगरालू होंगे, अर्थात सीधे नहीं होंगे, मसीह दज्जाल लाल रंगत का व्यक्ति होगा और उसके बाल घुंगरालू होंगे जो कि लाल व्यक्ति के अनुकूल नहीं होते, यह उसके लिए निंदा योग्य गुण होगा[1]।

अल्लाह के पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की कृपा व शांति हो) ने फ़रमाया: "मैंने उसके पीछे एक नाटा घुंगरालू बालों वाला व्यक्ति देखा"। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

काज़ी इयाज़ (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "सूडानियों की तरह"[2]।

8 – उसकी कोई संतान नहीं होगी।

अल्लाह के पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की कृपा और शांति हो) ने कहा: "उसकी कोई संतान नहीं होगी"। (सही मुस्लिम)

(1) अल-लामि-उल-सबीह (10/28)।

(2) मशारिक़ अल-अनवार (2/183)। अर्थात: उसके बाल सूडनियों के बालों की तरह घुंगरालू होंगे।

* इस मामले में निहित हदीसों का उल्लेख निम्नलिखित है:

श्रीमती फातिमा बिन्त क़ैस कहती हैं: "मैंने - पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) के- संदेश-वाहक की आवाज़ सुनी, वह आवाज़ लगा रहा था: नमाज़ एकत्रित करने वाली है, मैं भी मस्जिद गई और अल्लाह के दूत के साथ नमाज़ अदा की, मैं महिलाओं की उस पंक्ति में थी पुरुषों के ठीक पीछे होती है।

जब आप ने नमाज़ समाप्त की तो हँसते हुए मिंबर पर बैठ गए। आप ने कहा: हर आदमी अपनी नमाज़ की जगह पर ही बैठा रहे, फिर आप ने कहा: क्या तूम जानते हो कि मैं ने तुम्हें क्यों इकट्ठा किया है?

सहाबा ने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल अधिक जानते हैं।

आपने कहा: अल्लाह की क़सम, मैंने तुम्हें लुभाने या डराने के लिए इकट्ठा नहीं किया है, बल्कि तुम्हें इसलिए इकट्ठा किया है कि तमीम दारी एक ईसाई थे, वह आए, उन्होंने निष्ठा की प्रतिज्ञा ली और मुसलमान बन गए, फिर जो कुछ में तुम्हें मसीह दज्जाल के विषय में बताता रहा हूँ उसी से मिलती जुलती एक बात बताई है।

तमीम ने बताया है कि वह लख्म और जुज़ाम(1) के तीस लोगों के साथ एक समुद्री जहाज पर चढ़े, फिर समुद्र की लहरें एक महीने तक उनके साथ खेलती रहीं, फिर उन्होंने अपना जहाज़ समुद्र में पश्चिम की ओर एक द्वीप के किनारे पर लगा लिया।

फिर वहाँ से वे एक छोटी नाव में सवार हुए और द्वीप में प्रवेश किया। वहाँ उन्हें एक झबरा जानवर मिला, जिसके बाल बहुत अधिक थे, इतने अधिक थे कि उसके कारण लोग समझ ही नहीं पाते थे की उसका अगला हिस्सा किधर है और पिछला हिस्सा किधर है? लोगों ने उससे कहा: "तेरा सत्यानाश हो, तू क्या बला है?"

उसने कहा: मैं जस्सासा हूँ।

लोगों ने कहा: जस्सासा क्या?

उसने कहा: महल में मौजूद उस पुरुष के पास चलो, वह तुम्हारी बातें सुनने के लिए बहुत उत्सुक है।

---

(1) लख्म और जुज़ाम: यमन देश की दो प्रजातियाँ।

वह कहते हैं: जब जस्सासा ने एक पुरुष की बात की; तो हमें उस से डर लगा कि कहीं यह चुड़ेल न हो।

कहते हैं: फिर हम ने तेज़ी से चल कर महल में प्रवेश किया, तो देखते हैं कि वहाँ पर इतने बड़े कद का मानव मौजूद है कि हमने कभी उतना बड़ा और उतना कसकर बंधा हुआ आदमी नहीं देखा था। उसके हाथ घुटनों के बीच से टखनों तक होते हुए लोहे द्वारा गर्दन से जकड़े हुए हैं"। (सही मुस्लिम[1])

2 – अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) कहते हैं: "मैंने रात सपने में स्वयं को काबा के पास देखा - बुखारी व मुस्लिम के एक वर्णन में है: इस दौरान कि मैं सोया हुआ था, मैंने स्वयं को काबे का तवाफ़ (परिक्रमा) करते हुए देखा - ।

तो देखता हूँ कि वहाँ पर गेहूंआ रंग का एक आदमी है, जो गेहूए रंग के सभी आदमियों में सबसे सुंदर दिख रहा था, उसकी चोटी उसके कंधों के बीच लटकी हुई थी, उसके बाल कंघी किए हुए थे, - बुखारी व मुस्लिम के एक वर्णन में है उसके बाल सीधे थे –, उसके सिर से पानी टपक रहा था, अपने दोनों हाथ दो आदमियों के कंधों पर रखे हुए था और उन दोनों के बीच (अल्लाह के) घर का तवाफ़ कर रहा था, मैंने पूछा: ये कौन है?

तो उन्होंने (फ़रिश्तों ने) कहा: यह मसीह इब्न मरयम हैं।

मैंने उनके पीछे एक आदमी को देखा, जिसके बाल घुंगरालू और उलझे हुए थे, वह दाहिनी आँख से काना था - बुखारी व मुस्लिम के एक वर्णन में है: फिर मैं इधर उधर देखने लगा, तो देखता हूँ कि वहाँ पर एक लाल रंगत का भारी भरकम आदमी मौजूद है - , मेरे देखे हुए लोगों में सबसे अधिक उसकी छवि वाला इब्ने-क़तन[2] है, अपने दोनों हाथों को दो आदमियों के कंधे पर रख कर (अल्लाह के) घर का तवाफ़ कर रहा था।

मैंने पूछा: यह कौन है?

उन्होंने कहाः यह मसीह दज्जाल है"। (सही बुखारी व सही मुस्लिम[3])

---

(1) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: जस्सासा की कहानी, (2942)।

(2) वह अब्दुल-उज़्ज़ा बिन क़तन बिन अम्र जाहिली खुज़ाई है, उसकी माँ हाला बिन्त खुवैलद खदीजा बिन्त खुवैलद (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की बहन हैं।

(3) सही बुखारी, पुस्तक: नबियों की हदीसें, अध्याय: अल्लाह के कथन "और किताब में मरयम का ज़िक्र करो॥।, संख्या (3440), व सही मुस्लिम, पुस्तक: ईमान, अध्याय: मसीह इब्न मरयम और मसीह दज्जाल का उल्लेख, संख्या (169) इब्ने-उमर (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

3 - श्री अब्दुल्लाह बिन उमर (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) कहते हैं: अल्लाह के पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने लोगों के बीच खड़े होकर अल्लाह की शान के अनुसार उसकी स्तुति का वर्णन किया, फिर आपने दज्जाल का उल्लेख किया - बुखारी में यह इज़ाफा है: आपने विस्तार पूर्वक उसका उल्लेख किया –।

और कहा: "मैं तुम्हें उसके विषय में चेतावनी दे रहा हूँ, कोई पैग़ंबर ऐसा नहीं गुज़रा जिसने अपने समुदाय को उसके बारे में चेतावनी न दी हो, पैग़ंबर नूह (उन पर शांति हो) ने भी अपनी कौम को उससे सचेत किया है।

लेकिन मैं तुम्हें उसके बारे में कुछ ऐसा बताऊंगा जो किसी नबी ने अपने लोगों को नहीं बताया था, जान लो कि वह काना होगा और अल्लाह काना नहीं है"। (सही बुखारी व सही मुस्लिम[1])

4 - श्री अब्दुल्लाह बिन उमर (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) कहते हैं: "अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) के पास दज्जाल का ज़िक्र किया गया तो आपने फ़रमाया: बेशक अल्लाह तुम लोगों पर छुपा हुआ नहीं है,[2] निस्संदेह अल्लाह काना नहीं है, - यह कहते हुए आपने अपनी आंखों की ओर हाथ से इशारा किया -।

जबकि मसीह दज्जाल दाहिनी आंख से काना होगा, उसकी आंख ऐसी होगी जैसे उभरा हुआ अंगूर"। (सही बुखारी व सही मुस्लिम[3])

5 - अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) कहते हैं: "दज्जाल के दोनों आंखों के बीच क फ र लिखा होगा, अर्थात काफिर"। (सही मुस्लिम[4])

6 - अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) कहते हैं: "दज्जाल की

---

(1) सही बुखारी, पुस्तक: मग़ाज़ी, अध्याय: अलविदाई हज, संख्या (4402), व सही मसूलिम, पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: इब्ने-सय्याद का उल्लेख, संख्या (169)।

(2) अर्थात: तुम लोग पवित्र कुरआन के माध्यम से अल्लाह को भली भांति जानते हो।

(3) सही बुखारी, पुस्तक: तौहीद, अध्याय: अल्लाह का कथन (तुम मेरी निगाह में परवान चढ़ो) और अल्लाह का कथन (वह हमारी निगाहों तले चल रही थी), संख्या (7407), व सही मसूलिम, पुस्तक: ईमान, अध्याय: मसीह बिन मरयम और मसीह दज्जाल का उल्लेख, संख्या (169)।

(4) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल, उसके लक्षण और उसके साथ जो होगा उसका उल्लेख, संख्या (2933), श्री अनस बिन मालिक (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

दोनों आंखों के बीच काफिर लिखा होगा"। (सही बुखारी व सही मुस्लिम[1])

7 - अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) कहते हैं: "दज्जाल मिटी आँख वाला होगा, उस पर एक मोटी चमड़ी होगी, दोनों आंखों के बीच काफिर लिखा होगा, जिसे हर -पढ़ा लिखा और अनपढ़- मोमिन व्यक्ति पढ़ लेगा"। (सही मुस्लिम[2])

8 - अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) कहते हैं: "दज्जाल बाईं आँख से काना होगा, उसके बाल बड़े घने होंगे"। (सही मुस्लिम[3])

9 - श्री अबू-सईद खुदरी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहते हैं: "मैं इब्ने-साइद के साथ मक्का गया, तो उसने मुझ से कहा: सुनो, मैं कुछ लोगों से मिला हूँ, जो समझते हैं कि मैं ही दज्जाल हूँ, क्या तुमने अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की दया और शांति हो) को यह कहते हुए नहीं सुना कि: दज्जाल की कोई संतान नहीं होगी? मैंने कहा: क्यों नहीं! (बिल्कुल सुना है), तो उसने कहा: मेरी तो संतान भी है। (सही मुस्लिम[4])

❊❊❊

(1) सही बुखारी, पुस्तक: तौहीद, अध्याय: अल्लाह का कथन (तुम मेरी निगाह में परवान चढ़ो) और अल्लाह का कथन (वह हमारी निगाहों तले चल रही थी), संख्या (7407), श्री अनस बिन मालिक (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस, व सही मसूलिम, पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: इब्ने-सय्याद का उल्लेख, संख्या (169), श्री इब्ने-उमर (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(2) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल, उसके लक्षण और उसके साथ जो होगा उसका उल्लेख, संख्या (2934), श्री हुज़ैफ़ा बिन यमान (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(3) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल, उसके लक्षण और उसके साथ जो होगा उसका उल्लेख, संख्या (2934), श्री हुज़ैफ़ा बिन यमान (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(4) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: इब्ने-सय्याद का उल्लेख, संख्या (2927)।

मसीह दज्जाल का सच

मसीह दज्जाल आदम पुत्रों में से एक हैं, अल्लाह उसके द्वारा अपने भक्तों की परीक्षा लेगा, वह उसे कुछ काम करने की क्षमता देगा, फिर उन्ही को करने में उसे असमर्थ भी कर देगा।

क़ाज़ी इयाज़ (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "दज्जाल की विषय में जिन हदीसों का वर्णन इमाम मुस्लिम ने - अपनी "सही" में - किया है: वे ऊसके अस्तित्व की वैधता के लिए सत्यवादियों का प्रमाण हैं, और इस बात का प्रमाण भी कि वह एक विशिष्ट व्यक्ति है, जिसके द्वारा अल्लाह ने अपने बंदों का परीक्षण किया है और उसे अपनी क्षमताओं में से कुछ चीज़ों पर क्षमता दी है; ताकि बुराई अच्छाई से अलग हो जाए, जैसे:

हत्या के बाद मृत व्यक्ति को पुनर्जीवित करना।

दुनिया के सौंदर्य और उर्वरता का उसके साथ प्रकट होना।

उसके स्वर्ग और आग और उसकी दो नदियों का प्रकट होना।

पृथ्वी के खज़ानों का उसके पीछे-पीछे चलना।

आकाश को बारिश का और धरती को उगाने का आदेश देना।

यह सब महान अल्लाह की शक्ति और इच्छा से होगा, उसके बाद महान अल्लाह उसे अक्षम कर देगा, जैसा कि कहा है: "फिर वो उस व्यक्ति के अलावा किसी अन्य पर हावी नहीं होगा"।

फिर वह हत्या के बाद पुनर्जीवित किये हुए उस व्यक्ति की दोबारा हत्या करने में या किसी अन्य की हत्या करने में सक्षम नहीं होगा, इस सब के बाद उसका ज़ोर टूट जाएगा, उसे पैग़ंबर ईसा मसीह (उन पर शांति हो) मार डालेंगे और अल्लाह मोमिनों के पाऊँ जमा देगा।

उसे मार डालेंगे, फिर अल्लाह ईमान वाले लोगों के पांव जमा देगा।

यह सुन्नत वालों, फिक़्ह[1] और हदीस वालों के समूह और उनके समकक्षों का सिद्धांत है"[2]।

❋❋❋

(1) फिक़्ह: इस्लामी न्यायशास्त्र।

(2) इकमाल अल-मूलिम बि-फ़वाइदि मुस्लिम (8/474)।

मसीह दज्जाल की दुर्बलता

मसीह दज्जाल एक कमज़ोर व्यक्ति है, जो अपने काने पन को दूर करने में असमर्थ होगा, जब ईमान वाला व्यक्ति उसके समय को पाएगा; तो अल्लाह का सहारा लेगा और अल्लाह की आज्ञा से दज्जाल उसे कुछ भी नुकसान नहीं पहुँचा पाएगा।

श्री मुज़हिरी (अल्लाह उन पर दया करे) ने इमाम अबू-बक्र कलाबाज़ी (अल्लाह उन पर दया करे) (मृत्यु 384 हिजरी) से वर्णन करते हुए कहा: "अगर वह काना नहीं होता और उसकी दोनों आँखें स्वस्थ होतीं; तो यह किसी संदेह को जन्म नहीं देता, बल्कि अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की दया और शांति उस पर हो) का मतलब यह था कि:

वह एक इंसान है कोई जानवर या शैतान (राक्षस) नहीं है।

उसके पास कोई अतिरिक्त बल या असमान्य स्थिति नहीं है कि उस से एक अत्याचारी, निरंकुश, तानाशाह, शासक से अधिक डरा जाए।

वह एक इंसान है जिसकी अल्लाह ने लोगों की संरचना की तरह संरचना की है, जो चीज़ लोगों को पीड़ा देती है वह उसे भी पीड़ा देती है, वह भी उन चीज़ों का मोहताज होगा जिनके मोहताज सामान्य लोग होते हैं।

वह काने पन के संकट से पीड़ित होगा और वह उसे अपने आप से दूर करने में असमर्थ होगा।

यदि महान अल्लाह उस के पीछे एक मच्छर भी लगा दे; तो वही उसे उसके सारे दावों से फेरने के लिए काफ़ी हो जाए।

यदि अल्लाह उसकी रुकी हुई नस को चला दे या चलती हुई नस को शांत कर दे; तो भी उसका बल खत्म हो जाएगा और उसकी हालत उसे परेशान कर देगी।

दज्जाल काल द्वारा आज़माईश में डाले गए लोगों और उसका शासन पाने वालों के लिए यह अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) की ओर से एक प्रेरणा है, ताकि उनके अंदर उसका किसी आम शासक के डर से अधिक ना हो"[1]।

---

(1) अल-मफ़ातीह फ़ी शर्ह अल-मसाबीह (5/410)।

श्री मुजहिरी ने कहा: श्री कलाबाज़ी के विश्लेषण का सारांश यह है कि वह तुम जैसा ही एक इंसान होगा, बल्कि तुमसे भी अधिक दुर्बल होगा; क्योंकि वह काना है, और कानापान कमी और दोष है, अत: दो कारणों से उसका अल्लाह न होना ज़रूरी हो जाता है:

पहला: अल्लाह के लिए अनिवार्य है कि उसकी हस्ती किसी भी संकट या दोष से सुरक्षित हो।

दूसरा: अगर दज्जाल वास्तविक अल्लाह होता तो स्वयं का दोष समाप्त कर लेता और स्वयं के लिए किसी भी कमी से संतुष्ट न होता।

फिर उसका कानापान अगर स्वयं उसी की ओर से है; तो अल्लाह के गुण अपूर्ण नहीं होते।

और अगर यह दोष इसी अन्य की ओर से है - जो की सत्य भी है - तो वह निर्मित अपूर्ण प्राणी है, अतः जरूरी हो जाता है कि वह दूसरे अत्याचारी अन्यायी अन्य प्राणियों के तरह ही हो"[1]।

❋❋❋

(1) अल-मफ़ातीह फ़ी शरहि अल-मसाबीह (5/410)।

मसीह दज्जाल की वर्तमान स्थिति

अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) के कथनों में दज्जाल की वर्तमान स्थिति की व्याख्या आई है, उसकी स्थिति इस प्रकार है:

1 - वह वर्तमान में जीवित है।

अल्लाह के पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने - श्री तमीम दारी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के कथन को वर्णन करते हुए – कहा: "दज्जाल कहेगा: मैं तुम्हें अपने बारे में सूचित किए देता हूँ, मैं ही मसीह हूँ, शीघ्र ही मुझे निकलने की अनुमति मिलेगी"। (सही मुस्लिम)

2 - वह एक समुद्री द्वीप में है।

अल्लाह के पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने - श्री तमीम दारी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के कथन को वर्णन करते हुए – कहा: "तमीम ने बताया है कि वह लख्म और जुज़ाम[1] के तीस लोगों के साथ एक समुद्री जहाज पर चढ़े, फिर समुद्र की लहरें एक महीने तक उनके साथ खेलती रहीं, फिर उन्होंने अपना जहाज़ समुद्र में पश्चिम की ओर एक द्वीप के किनारे पर लगा लिया, फिर वहाँ से वे एक छोटी नाव में सवार हुए और द्वीप में प्रवेश किया"। (सही मुस्लिम)

3 - लोहे के सख्त बंधन से बंधा हुआ है, इसका वर्णन इस प्रकार है:

क - उसके हाथ उसकी गर्दन से बंधे हुए और लोहे से जकड़े हुए हैं।

ख - उसके घुटनों और टखनों के बीच का हिस्सा भी लोहे से बंधा हुआ है।

अल्लाह के पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने - श्री तमीम दारी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के कथन को वर्णन करते हुए – कहा: "फिर हम ने तेज़ी से चल कर महल में प्रवेश किया, तो देखते हैं कि वहाँ पर इतने बड़े कद का मानव मौजूद है कि हमने कभी उतना बड़ा और उतना कसकर बंधा हुआ आदमी नहीं देखा था। उसके हाथ (लोहे से) गर्दन पर बांधे हुए हैं और उसके घुटनों और टखनों के बीच का हिस्सा भी लोहे से जकड़ा हुआ है"। (सही मुस्लिम[2])

❊❊❊

(1) लख्म और जुज़ाम: यमन देश के दो प्रजातियाँ।

(2) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: जस्सासा की कहानी, (2942), श्रीमती फ़ातिमा बिन्त क़ैस (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

मसीह दज्जाल के उद्भव के संकेत

हदीसों में मसीह दज्जाल के प्रकट होने के संकेतों का उल्लेख है, जो निम्न हैं:

1 - बैसान के खजूर के पेड़ पर फल नहीं आएंगे।

बैसान: फ़िलिस्तीन के उत्तर और तबरिया झील के दक्षिण में स्थित एक शहर है, झील से 25 किमी और बैतुल-मक़दिस (यरूशलेम) से 120 किमी दूर है।

अल्लाह के पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने - श्री तमीम दारी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के कथन को वर्णन करते हुए – कहा: "दज्जाल ने कहा था: मुझे बैसान के खजूर के पेड़ों के बारे में बताओ।

हमने कहा: उसके किस विषय के बारे में पूछ रहे हो?

उसने कहा: खजूर के पेड़ों के बारे में पूछ रहा हूँ, क्या उन पर फल आते हैं? हमने कहा: हाँ।

उसने कहा: सुनो, जल्द ही वहाँ के पेड़ फल देना बंद कर देंगे"। (सही मुस्लिम)

यह संकेत लगभग आठ सौ साल पहले दिखाई देना शुरू हो गया है, श्री याक़ूत हमवी (अल्लाह उन पर दया करे) (मृत्यु 626 हिजरी) ने कहा: "मैंने उसे कई बार देखा है; वहाँ खजूर के दो पेड़ ही ग़ैर फलदार देखे"[(1)]।

(1) मूजम अल-बुलदान (1/527)।

बैसान के खजूर के पेड़

2 - तबरिया झील के पानी का समापन।

उक्त झील का पानी अब कम हो चुका है और वह निरंतर घट ही रहा है।

तबरिया झील: फ़िलिस्तीन के उत्तर में, गोलान पहाड़ियों के पास, बैतुल मक़दिस (यरूशलेम) से 150 किमी दूर और बैसान के उत्तर में 25 किमी दूर है।

अल्लाह के पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने - श्री तमीम दारी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के कथन को वर्णन करते हुए – कहा: "दज्जाल ने कहा: मुझे तबरिया झील के बारे में बताओ।

हमने पूछा: उसके किस विषय की सूचना माँग रहे हो?

तो उसने कहा: क्या उसमें पानी है? उन्होंने कहा: उसमें बहुत पानी है।

तो उसने कहा: शीघ्र ही उसका पानी समाप्त हो जाएगा। (सही मुस्लिम)

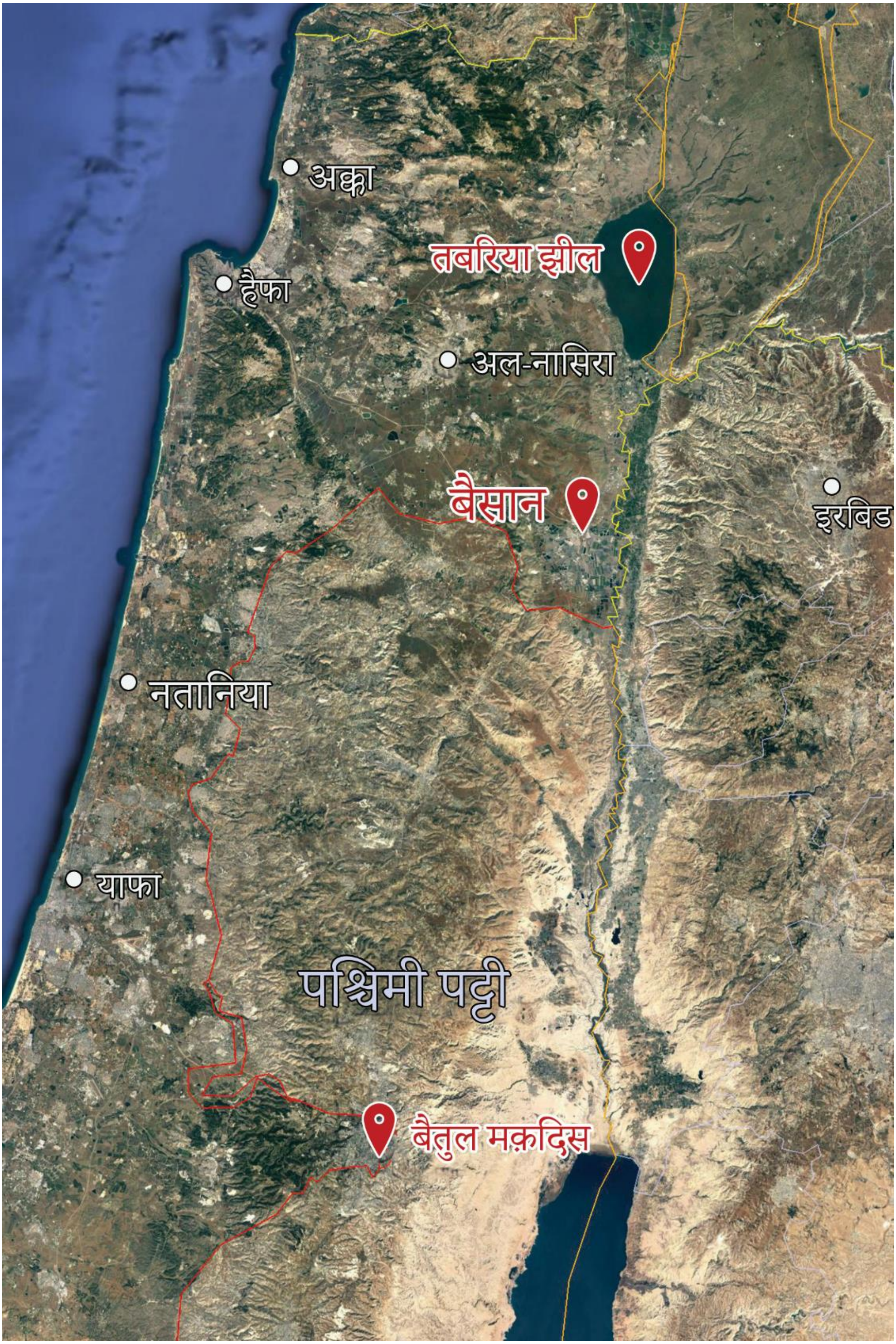
अक्का
तबरिया झील
हैफा
अल-नासिरा
बैसान
इरबिड
नतानिया
याफा
पश्चिमी पट्टी
बैतुल मक़दिस

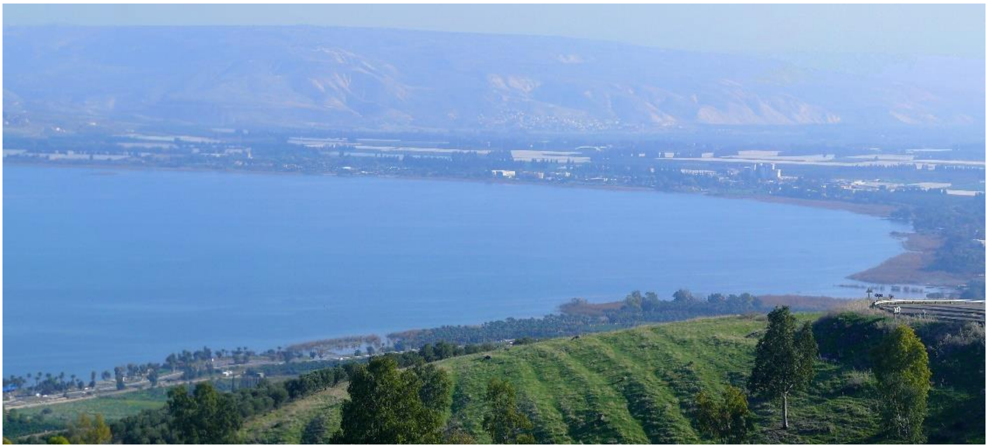

तबरिया झील

तबरिया झील में पानी की कमी को देखा जा सकता है।

3 - ज़ुग़र के झरने के पानी का समापन और वहाँ के लोग उसके पानी से सिंचाई नहीं करेंगे।

ज़ुग़र का झरना ऊर्दुन (जॉर्डन) में मृत सागर के दक्षिणपूर्वी तट पर, ग़ौर अल-साफी में, वादी अल-हसा के मुहाने के पास है, जो करक से 27 किमी और बैतुल-मक़दिस (यरूशलेम) से 85 किमी दूर है।

अल्लाह के पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने - श्री तमीम दारी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के कथन को वर्णन करते हुए – कहा: "दज्जाल ने कहा: मुझे ज़ुग़र के झरने के बारे में कुछ बताओ।

लोगों ने कहा: तुम्हें झरने के बारे में क्या सूचना चाहिए?

दज्जाल ने कहा: क्या उस झरने में पानी है? और क्या वहाँ के लोग उस झरने के पानी से सिंचाई करते हैं?

हमने उससे कहा: हाँ, उसका पनि तो बहुत अधिक है और वहाँ के लोग उसके पानी से सिंचाई भी करते हैं"। (सही मुस्लिम)

श्री अब्दुल-हक़ दहलवी (अल्लाह उन पर दया करे) (मृत्यु 1052 हिजरी) ने कहा: "ज़ुग़र शाम में एक गांव का नाम है, वहाँ पर एक झरना है, उसके पानी का चला जाना दज्जाल के उद्भव का संकेत है"(1)।

मुहम्मद बश्शारी (अल्लाह उन पर दया करे) (मृत्यु 380 हिजरी) ज़ुग़र क्षेत्र का वर्णन करते हुए कहते हैं: "एक ऐसा नगर जो परदेसियों का हत्यारा है, उसका पानी खराब है, जिसके पास मौत का फ़रिश्ता ना आ रहा हो उसे वहाँ चले जाना चाहिए, मैं इस संबंध में इस्लाम में उसका कोई उदाहरण नहीं जानता, मैंने और भी महामारी वाले नगर देखे हैं, लेकिन ज़ुग़र उन जैसा नहीं है"(2)।

हमने एक भरोसेमंद व्यक्ति को ज़ुग़र शहर की यात्रा करने और वहाँ के लोगों से ज़ुग़र झरने के बारे में पूछने का काम सौंपा था, सो वहाँ के लोगों ने उस झरने की ओर रास्ता दिखाया, उसने झरने की चल और अचल तस्वीरें लीं, लोगों ने उसे बताया कि "दस साल पहले, ज़ुग़र झरना ताज़ा पानी से भरा था, वे इससे अपनी फसलों की सिंचाई भी करते थे और इस पर ही निर्भर थे।

---

(1) लमआत अल-तनक़ीह फ़ी शर्हि मिशकाति-ल-मसाबीह (8/714)।

(2) अहसन अल-तक़ासीम फ़ी मारिफ़ति-ल-अक़ालीम (178)।

लेकिन अब (1443 हिजरी में) इसका पानी बहुत कम रह गया है, वे इसे "ऐन अबाता" (बेकार झरना) भी कहते हैं"[1]।

(1) उनका बयान हमारे पास ऑडियो और वीडियो द्वारा सत्यापित है।

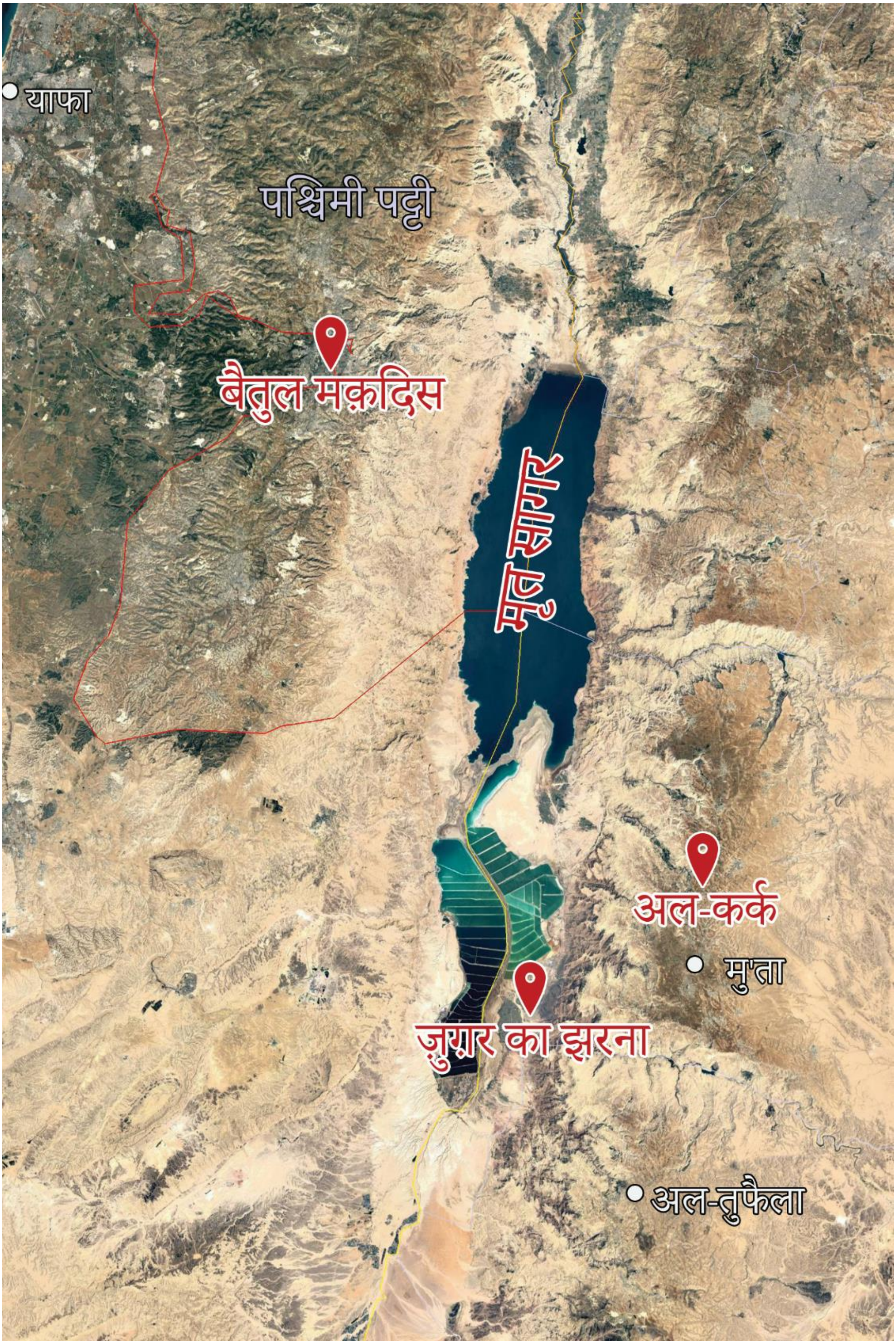
याफा
पश्चिमी पट्टी
बैतुल मक़दिस
मृत सागर
अल-कर्क
मु'ता
ज़ुग़र का झरना
अल-तुफैला

ज़ुग़र का झरना; उसके पानी में कमी को देखा ज सकता है।

* इस विषय में वर्णित हदीस का उल्लेख निम्न में है:

अल्लाह के पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने - दज्जाल के विषय में श्री तमीम दारी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के कथन को वर्णन करते हुए – कहा: "फिर हम ने तेज़ी से चल कर महल में प्रवेश किया, तो देखते हैं कि वहाँ पर इतने बड़े कद का मानव मौजूद है कि हमने कभी उतना बड़ा और उतना कसकर बंधा हुआ आदमी नहीं देखा था। उसके हाथ (लोहे से) गर्दन पर बांधे हुए हैं और उसके घुटनों और टखनों के बीच का हिस्सा भी लोहे से जकड़ा हुआ है।

हमने कहा: तेरा नाश हो! तू क्या है?

उस ने कहा कि तुम लोग मेरी सूचना प्राप्त करने में सफल रहे, अब तुम बताओ कि तुम कौन हो?

लोगों ने कहा कि हम अरब के कुछ लोग हैं, हम एक समुद्री जहाज़ में सवार हुए, परन्तु अचानक समुद्र की उथल-पुथल का सामना हुआ, फिर एक महीने तक लहरें हमारे साथ खेलती रहीं।

फिर हम तुम्हारे इस द्वीप पर आ गए, फिर वहाँ से हम नावों पर सवार हुए और द्वीप में प्रवेश किया। वहाँ हमें एक झबरा जानवर मिला, जिसके बाल बहुत अधिक थे, - एक वर्णन में है: फिर हम एक मानव से मिले जो बालों को ज़मीन पर घसीट कर चल रहा था – पता ही नहीं चल पा रहा था कि उसका अगला हिस्सा किधर है और पिछला हिस्सा किधर है?

हम ने उससे कहा: "तेरा सत्यानाश हो, तू क्या बला है?"

उसने कहा: मैं जस्सासा हूँ।

हम ने कहा: जस्सासा क्या?

उसने कहा: महल में मौजूद उस पुरुष के पास चलो, वह तुम्हारी बातें सुनने के लिए बहुत उत्सुक है।

तो हम तेज़ी से तुम्हारी ओर आ गए, हम तो घबरा ही गए थे कि कहीं यह कोई चुड़ेल न हो।

उसने कहा: मुझे बैसान में मौजूद खजूर के पेड़ों के बारे में बताओ।

हमने कहा: उसके किस विषय के बारे में पूछ रहे हो?

उसने कहा: खजूर के पेड़ों के बारे में पूछ रहा हूँ, क्या उन पर फल आते हैं? हमने कहा: हाँ.

उसने कहा: सुनो, जल्द ही वहाँ के पेड़ फल देना बंद कर देंगे।

उसने कहा: मुझे तबरिया झील के बारे में बताओ।

हमने पूछा: उसके किस विषय की सूचना माँग रहे हो?

तो उसने कहा: क्या उसमें पानी है? उन्होंने कहा: उसमें बहुत पानी है।

तो उसने कहा: शीघ्र ही उसका पानी समाप्त हो जाएगा।

उसने कहा: मुझे ज़ुग़र के झरने के बारे में कुछ बताओ।

लोगों ने कहा: तुम्हें झरने के बारे में क्या सूचना चाहिए?

उसने कहा: क्या उस झरने में पानी है? और क्या वहाँ के लोग उस झरने के पानी से सिंचाई करते हैं?

हमने कहा: हाँ, उसका पनि तो बहुत अधिक है और वहाँ के लोग उसके पानी से खेती की सिंचाई भी करते हैं। (सही मुस्लिम[1])

❋❋❋

(1) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: जस्सासा की कहानी, (2942), श्रीमती फ़ातिमा बिन्त क़ैस (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

मसीह दज्जाल कब निकलेगा?

मसीह दज्जाल ने अपने बारे में बताया है कि उसका बाहर आना निकट ही है और अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने उस खबर की पुष्टि की है, चुनांचे अल्लाह के पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने - दज्जाल के विषय में श्री तमीम दारी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के कथन को वर्णन करते हुए – कहा: "निश्चित रूप से मैं अपने बारे में तुम्हें सूचना देता हूँ, मैं ही मसीह हूँ, और शीघ्र ही मुझे निकलने की अनुमति मिल जाएगी"। (सही मुस्लिम[(1)])

दज्जाल के उद्भव का एक संकेत: क़ुस्तंतीनिय्या[(2)] की विजय है, उस पर विजय प्राप्त किए बिना केवल आक्रमण नहीं।

मुसलमानों ने उस पर कई बार आक्रमण किया, पहला आक्रमण वर्ष (49 हिजरी) में मुआविया बिन अबू-सुफ़यान (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) के काल में हुआ था, लेकिन उस पर विजय प्राप्त नहीं हो सकी।

जहाँ तक उस पर विजय का सवाल है तो यह दो बार होगी:

पहली बार: मुहम्मद बिन मुराद बिन मुहम्मद, (अल्लाह उन पर दया करे) जिन्हें: "मुहम्मद फातिह[(3)] की उपाधि मिली, वर्ष (857 हिजरी) में लड़ाई करके उस पर विजय हासिल

---

(1) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: जस्सासा की कहानी, (2942), श्रीमती फ़ातिमा बिन्त क़ैस (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(2) कुस्तंतीनिय्या (कॉन्स्टेंटिनोपल) : यह अब "इस्तांबोल" है, इसे इस्तांबोल बिन तीमावस ने बनवाया था, वह इसे पूरा किए बिना ही मर गया, फिर उसके बेटे कॉन्सटेंटाइन ने इसे पूरा किया, इसे कॉन्स्टेंटाइन के पिता "इस्तांबोल" की ओर संबंधित करते हुए "इस्तांबोल" कहा गया, तथा इसे रोमन राज्य के संस्थापक "कॉन्स्टेंटाइन" की ओर संबंधित करते हुए "कॉन्स्टेंटिनोपल" कहा गया।

वर्ष 857 हिजरी में मुहम्मद अल-फ़ातिह द्वारा इसकी विजय के बाद, उन्होंने इसका नाम "इस्लामबोल" रखा जिसका अर्थ है: इस्लाम का शहर।

फिर वर्ष 1350 हिजरी में इसका नाम बदलकर "इस्तांबोल" रख दिया गया।

(3) फातेह: विजेता।

कर चुके हैं, यह विजय दज्जाल के उद्भव का संकेत नहीं है; क्योंकि इसे लड़ाई से जीता गया था।

मुल्ला अली क़ारी (अल्लाह उन पर दया करे) (मृत्यु 1014 हिजरी) ने कहा: "क़ुस्तंतीनिय्या (कॉन्स्टेंटिनोपल): बहुत लड़ाई के बाद जीता जाता है"(1)।

दूसरी बार: अंतिम काल में लड़ाई के बग़ैर ही केवल "ला इलाहा इलल्लाह"(2) और "अल्लाहु अकबर"(3) द्वारा जीत लिया जाएगा, यही विजय दज्जाल के उद्भव का संकेत है।

जब मुस्लिम अंतिम काल में क़ुस्तंतीनिय्या (कॉन्स्टेंटिनोपल) पर लड़ाई के बग़ैर केवल "ला इलाहा इलल्लाह" और "अल्लाहु अकबर" द्वारा विजय प्राप्त कर लेंगे; तो दज्जाल का उद्भव हो जाएगा, इसका प्रमाण निम्नलिखित हदीसें हैं:

1 - अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने फ़रमाया: "क्या तुमने किसी ऐसे शहर के बारे में सुना है, जिसके एक किनारे पर जमीन(4) है और दूसरी किनारे पर समुद्र(5) है?

लोगों ने कहा: हाँ, हे अल्लाह के दूत!

आपने फ़रमाया: क़यामत तब तक नहीं आएगी जब तक बनी-इसहाक(6) के सत्तर हज़ार लोग उस पर आक्रमण नहीं कर लेंगे।

जब वे वहाँ आयेंगे तो पाड़ाओ डालेंगे, फिर न हथियारों से लड़ाई लड़ेंगे और न कोई तीर ही चलाएंगे, वे "ला इलाहा इलल्लाह" और "अल्लाहु अकबर" कहेंगे, तो उस नगर का एक हिस्सा गिर जाएगा, - श्री सौर का कहना है: मैं तो इतना ही जानता हूँ कि उन्होंने(7) कहा: समुद्र की ओर का हिस्सा -।

फिर वे दूसरी बार "ला इलाहा इलल्लाह" और "अल्लाहु अकबर" कहेंगे: तो उसका दूसरा हिस्सा गिर जाएगा।

---

(1) मिरक़ात अल-मफ़ातीह (8/3416)।

(2) अर्थात: अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है।

(3) अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है।

(4) यह उसका पूर्वी तथा पश्चिमी किनारा है।

(5) यह उसका उत्तरी तथा दक्षिणी किनारा है।

(6) बनी-इसहाक: अर्थात: पैग़ंबर इसहाक़ (उन पर शांति हो) के वंश से सत्तर हज़ार लोग, जो मुस्लिम होंगे।

(7) अर्थात: अबू-हुरैरह (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) ने।

फिर वे तीसरी बार "ला इलाहा इलल्लाह" और "अल्लाहु अकबर" कहेंगे; तो उनके लिए पूरी तरह रास्ता खुल जाएगा और वे उसमें प्रवेश करेंगे और ग़नीमत[1] ले लेंगे।

फिर अभी वे ग़नीमत का बंटवारा कर ही रहे होंगे कि बांगी आएगा और कहेगा: दज्जाल बाहर आ गया है, इसलिए वे सब कुछ छोड़ कर वापस हो जाएंगे"। (सही मुस्लिम[2])

2 - अल्लाह के पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "फिर वे क़ुस्तंतीनिय्या पर विजय प्राप्त करेंगे; अपनी तलवारें जैतून के पेड़ पर लटका कर अभी वे ग़नीमत बाँट ही रहे होंगे; इतने में शैतान उनके बीच चिल्लाकर कहेगा: तुम्हारे पीछे तुम्हारे घरानों में मसीह दज्जाल आ चुका है, सो वे वहाँ से निकल पड़ेंगे जबकि वह सूचना झूठी होगी।

परन्तु जब वे शाम पहुँचेंगे तो दज्जाल निकल चुका होगा"। (सही मुस्लिम[3])

श्री इब्ने कसीर (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "अंतिम काल में मुसलमानों की ओर से क़ुस्तंतीनिय्या नामी रोमन शहर पर विजय प्राप्त किए जाने के बाद, दज्जाल को बाहर निकलने की अनुमति दे दी जाएगी"[4]।

❋❋❋

(1) ग़नीमत: युद्ध में प्राप्त धन।

(2) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: कयामत तब तक नहीं आएगी जब तक कि आदमी किसी की क़ब्र के पास से गुज़रते हुए विपत्ति के कारण यह तमन्ना नहीं करेगा कि कक्ष वो इस क़ब्र वाले की जगह पर होता, संख्या (2920), श्री अबू-हुरैरा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(3) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: क़ुसतंतीनिय्या की विजय, दज्जाल का उद्धव और श्री ईसा बिन मरयम का उतरना, संख्या (2897), श्री अबू-हुरैरा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(4) अल-बिदाया व अल-निहाया (19-205)।

मसीह दज्जाल के उद्भव का कारण

अल्लाह ने हर चीज़ का एक कारण बनाया है; दज्जाल के प्रकट होने का कारण उसका क्रोध होगा, श्री नाफ़े (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) ने कहा: "श्री इब्ने-उमर मदीने के एक रास्ते पर इब्ने-साइद से मिले, तो उन्होंने उससे कुछ कहा जिससे वह क्रोधित हो गया और इतना फूल गया कि गली भर गई।

फिर श्री इब्ने-उमर श्रीमती हफ्सा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के पास आए जिन्हें घटना की सूचना मिल चुकी थी।

तो उन्होंने उनसे कहा: अल्लाह तुम पर दया करे, तुम इब्ने-सय्याद से क्या चाहिए था?! क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) का कथन है: वह (दज्जाल) केवल किसी बात पर क्रोधित होने के कारण बाहर आएगा"। (सही मुस्लिम[1])

श्री सनआनी (अल्लाह उन पर दया करे) (मृत्यु 1182 हिजरी) ने कहा: "आप ने इस क्रोध के कारण का उल्लेख नहीं किया। इसका मतलब यह है: यदि महान अल्लाह जब उसका उद्भव निर्धारित कर देगा तो उसे क्रोधित करने का कारण भी पैदा कर देगा"[2]।

❊❊❊

(1) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: इब्ने-सय्याद का उल्लेख, संख्या (2932)।

(2) अल-तनवीर फ़ी शरहि अल-जामि अल-सग़ीर (4/205)।

मसीह दज्जाल के उद्भव का स्थान

पैग़ंबर (उन पर शांति हो) की हदीस में मसीह दज्जाल के उद्भव के स्थान की व्याख्या आई है, उसकी व्याख्या इस प्रकार है:

1 - वह मदीने के पूर्व की दिशा से निकलेगा।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "वह शाम के सागर[1], या यमन के सागर[2] में है, नहीं, बल्कि, पूर्व की ओर[3] से है"। (सही मुस्लिम [4])

2 - श्री अबू-अब्दुल्लाह मुहम्मद कुर्तुबी (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "यह अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) की ओर से संदेह या अनुमान था, या आपका इरादा श्रोता से रहस्यमय करने का था, फिर आपने उसे पूरी तरह से नकार दिया और कहा: (नहीं, बल्कि पूर्व की ओर से)"[5]।

---

(1) शाम सागर: लेवंत सागर / भूमध्य सागर।

(2) यमन सागर: यह यमन और ओमान के दक्षिण में स्थित है, और अब इसे "अरब सागर" कहा जाता है।

(3) यह वर्णन कैस्पियन सागर पर लागू होता है, जो चारों ओर से भूमि से घिरा सबसे बड़ा समुद्र है।

(4) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: जस्सासा की कहानी, संख्या (2942), श्रीमती फ़ातिमा बिन्त क़ैस (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(5) अल-तज़किरह बि-अहवाल अल-मौता व उमूर अल-आखिरह (1344)।

तुर्की
आर्मेनिया
अज़रबैजान
बाकू
पूर्वी सागर
साइप्रस
सीरिया
शाम देश का सागर
जॉर्डन
यरूशलेम
ईरान
कुवैत
कतर
बहरीन
कतर
मदीना मुनव्वरा
मदीना मुनव्वरा
सऊदी अरब
जेद्दा
मक्का मुकर्रमा
लाल सागर
इरित्रिया
यमन

3 - दज्जाल ख़ुरासान से निकलेगा।

खुरासान: एक विशाल क्षेत्र है, जिसमें: कैस्पियन सागर का दक्षिण, उसका दक्षिणी पश्चिम और उसका दक्षिणी पूर्व जिसका विस्तार दक्षिण तक है, शामिल हैं।[1]

श्री अबू-बक्र सिद्दीक (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया और शांति हो) ने हमें बताया: दज्जाल पूर्व की खुरासान नामक भूमि से निकलेगा, उसका अनुसरण ऐसे लोग करेंगे जिनके चेहरे चमड़े चढ़ी हुई ढालें जैसे होंगे। (मुसनद अहमद[2])

(1) खुरासान की सीमाएँ: उत्तर में: कैस्पियन सागर और ऑक्सस नदी, दक्षिण में: किरमान, पूर्व में: काबुल, और पश्चिम में: जूंक़ान हैं।

(2) संख्या: (12)।

ख़्वारज़्म
उज़्बेकिस्तान
कैस्पियन सागर
ऑक्सस नदी
آذربيجان
तुर्कमेनिस्तान
अर्दबील
खुरासान
काबुल
अफ़ग़ानिस्तान
ईरान
Yunaqán
करमान
ओमान

4 - अस्फ़हान के सत्तर हज़ार यहूदी तैलसान पहने हुए उसके पीछे चलेंगे।

अस्फ़हान: तेहरान के दक्षिण में एक शहर है, जो तेहरान से 450 किमी की दूरी पर स्थित है।

तैलसान: एक प्रकार का आवरण जिससे यहूदी अपना सिर या कंधे ढँकते हैं।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "अस्फ़हान के सत्तर हज़ार यहूदी तैलसान पहनकर दज्जाल का अनुसरण करेंगे"। (सही मुस्लिम[1])

श्री इब्ने-कसीर (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "उसके उद्भव का आरंभ अस्फ़हान के एक मोहल्ले से होगा जिसे "यहूदिया" कहा जाता है, वहाँ के लोगों में से सत्तर हज़ार यहूदी उसका समर्थन करेंगे, उनके पास हथियार और सैजान होंगे - अर्थात हरे तैलसान – होंगे, इसी प्रकार सत्तर हज़ार तातारी और खुरासान का एक बड़ा समूह उसका समर्थन करेगा"[2]।

---

(1) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल की शेष हदीसें, संख्या (2944), श्री अनस बिन मालिक (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(2) अल-बिदाया व अल-निहाया (19/205)।

तैलसान
बाकू
कैस्पियन सागर
अर्दबील
ज़ंजान
सारी
क़ज़वीन
sanandaj
करमानशाह
अराक
काशान
अस्फ़हान

तैलसान

٥ - जब दज्जाल बाहर निकलेगा तो उसका इरादा और मंज़िल मदीना होगा।

अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "दज्जाल पूर्व से आएगा, उसकी एकमात्र ईच्छा मदीना होगी"। (सही मुस्लिम[1])

शायद उसके मदीने के इरादे का कारण यह हो कि अंतिम समय में ईमान मदीने में सिमट आएगा, अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "वास्तव में ईमान मदीने में सिमट आएगा जैसे एक सांप अपने बिल की ओर सिमटता है"। (सही बुखारी व सही मुस्लिम[2])

٦ - वह शाम और इराक के बीच एक मार्ग से मदीना जाएगा।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "वह शाम और इराक के बीच के एक मार्ग से निकलेगा"। (सही मुस्लिम[3])

श्री अबुल-अब्बास अहमद कुर्तुबी (अल्लाह उन पर दया करे) (मृत्यु 656 हिजरी) ने कहा: "दज्जाल के उद्भव की शुरुआत खुरासान से होगी, फिर वह इराक और शाम के बीच से होते हुए हिजाज़ की ओर बढ़ेगा"[4]।

---

(1) पुस्तक: हज, अध्याय: ताऊन और दज्जाल के प्रवेश से मदीने का संरक्षण, संख्या (1380), श्री अबू-हुरैरा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(2) सही बुखारी, पुस्तक: मदीने के गुण, अध्याय: ईमान मदीने में सिमट आएगा, संख्या (1876), व सही मुस्लिम, पुस्तक: ईमान, अध्याय: इस बात का बयान कि इस्लाम अजनबी शुरू हुआ और अंत में अजनबी ही बन जाएगा, और वह दो मस्जिदों के बीच सिमट जाएगा, संख्या (147), श्री अबू-हुरैरा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(3) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल, उसके लक्षण और उसके साथ जो होगा उसका उल्लेख, संख्या (2937), श्री नववास बिन समआन (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(4) अल-मुफ़हिम लिमा अशकल मिन तलखीसि किताबि मुस्लिम (23/116)।

कैस्पियन सागर
कुवैत
अरब खाड़ी
बहरीन
मदीना
सऊदिया

***

मसीह दज्जाल के उद्भव के समय लोगों की स्थिति

अल्लाह के नबी (उन पर शांति हो) की हदीसों में दज्जाल के बाहर आने पर लोगों की स्थिति की व्याख्या आई है, जो इस प्रकार है:

1 - लोग उस से भाग कर पहाड़ों में जाएंगे, अल्लाह के दूत (उन पर दया व शांति हो) ने कहा: "लोग दज्जाल से भाग कर पहाड़ों में जाएंगे"। (सही मुस्लिम)

2 - मुस्लिम रोमनों के साथ युद्ध में होंगे, फिर मुस्लिमों को उन पर विजय मिल जाएगी और वे ग़नीमत समेट रहे होंगे, तब वे दज्जाल के उद्भव के बारे में सुनेंगे, तो वे अपनी पत्नियों और बच्चों के प्रति भयभीत होकर अपने हाथों में जो कुछ युद्ध का धन और अन्य संपत्तियाँ होंगी सब फेंक देंगे और वे दज्जाल की खबर लेते हुए अपने परिवारों की ओर चल पड़ेंगे।

श्री इब्ने मसऊद (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "वे इसी हालत में होंगे कि अचानक एक बड़ी मुसीबत के बारे में सुनेंगे, उनके पास एक तेज़ आवाज़ पहुँचेगी कि दज्जाल उनके पीछे उनके बीवी बच्चों के पास पहुँच गया है।

यह सुनते ही वे अपने हाथों को झाड़ कर उसकी ओर मुड़ेंगे और दज्जाल का पता लगाने के लिए दस घुड़सवारों को आगे भेज देंगे"। (सही मुस्लिम)

3 - दज्जाल के मदीना आगमन पर वहाँ के लोगों में से एक ईमान वाला व्यक्ति उसके पास आएगा और उससे कहेगा: मैं गवाही देता हूँ कि तू ही दज्जाल है।

अल्लाह के दूत (उन पर दया व शांति हो) ने कहा: "तब सबसे अच्छे लोगों में से एक आदमी - या सबसे अच्छा आदमी - उसकी ओर बढ़ेगा और उससे कहेगा: मैं गवाही देता हूँ कि तू ही दज्जाल है"। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

*** इस विषय में वर्णित हदीसें निम्न में उल्लेखित हैं:**

1 - श्रीमती उम्मे-शरीक (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) से यह कथन सुना कि: "लोग दज्जाल से भाग कर पहाड़ों में चले जाएंगे। श्रीमती उम्मे शरीक ने पूछा: हे अल्लाह के दूत! उस समय अरब कहाँ होंगे? आपने कहा: उस समय वे बहुत थोड़े होंगे।" (सही मुस्लिम[(1)])

2 - श्री युसैर बिन जाबिर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) बताते हैं कि अब्दुल्ला बिन मसऊद (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "क़यामत उस समय तक नहीं आएगी जब तक कि विरासत का वितरण रुक नहीं जाएगा और युद्ध के धन की ख़ुशी खत्म नहीं हो जाएगी।

फिर उन्हों ने हाथ से इशारा किया और शाम की ओर इंगित करते हुए कहा: दुश्मन मुस्लिमों के खिलाफ़ युद्ध की तैयारी करेगा और मुस्लिम उसके खिलाफ़ युद्ध की तैयारी करेंगे।

मैंने कहा: आपका मतलब रोमन (ईसाइयों) से है?

उन्होंने कहा: हाँ, तुम्हारे उस युद्ध में बहुत अधिक पलट वार होंगे।

मुस्लिम मृत्यु की शर्त स्वीकार करने वाले दस्ते आगे भेजेंगे कि वे विजय प्राप्त किए बिना वापस नहीं लौटेंगे[(2)] तब वे सभी लड़ेंगे, यहाँ तक कि रात उनके बीच आ जाएगी, फिर ये लोग भी वापस आ जाएंगे और वे भी लौट जाएंगे। किसी का पलड़ा भारी नहीं होगा और वह दस्ता समाप्त हो जाएगा।

फिर मुस्लिम एक (दूसरे) दल को मौत की शर्त पर भेजेंगे कि उन्हें विजयी हुए बिना वापस नहीं लौटना है, फिर दोनों पक्षों के बीच युद्ध होगा यहाँ तक कि रात उनके बीच आ जाएगी, फिर ये लोग भी वापस आ जाएंगे और वे भी लौट जाएंगे। किसी का पलड़ा भारी नहीं होगा और वह दस्ता भी समाप्त हो जाएगा।

फिर मुस्लिम एक (तीसरे) दल को मौत की शर्त पर भेजेंगे कि उन्हें विजयी हुए बिना वापस नहीं लौटना है, फिर शाम तक दोनों पक्षों के बीच युद्ध होगा, फिर ये लोग भी वापस आ जाएंगे और वे भी लौट जाएंगे। किसी का पलड़ा भारी नहीं होगा और वह दस्ता भी समाप्त हो जाएगा।

फिर जब चौथा दिन आएगा; तो बचे हुए सभी मुस्लिम लोग शत्रु की ओर झपट पड़ेंगे,

(1) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल की शेष हदीसें, संख्या (2945)।

(2) अर्थात: वे वचन लेंगे कि वहाँ वे अपने प्राण दे देंगे।

अल्लाह सर्वशक्तिमान पराजय को उन (अविश्वासियों) के खिलाफ फेर देगा, फिर वे ऐसा जमकर लड़ेंगे, - कि उस तरह का युद्ध कभी नहीं देखा जाएगा, या यह कहा कि उस तरह का युद्ध कभी नहीं देखा गया होगा - (हवा इतनी विषाक्त हो जाएगी कि) अगर एक पक्षी भी उनके पास से गुजरेगा तो उन्हें पार करने से पहले ही मर जाएगा, एक पिता (घराने) के पुत्र एक दूसरे की गिनती करेंगे तो वे पाएंगे की उनकी संख्या तो सौ थी, लेकिन उनमें से एक ही व्यक्ति जीवित बचा है, तो भला बताओ ऐसी स्तिथि में जंग के किस धन की ख़ुशी होगी या कौनसी विरासत तकसीम होगी?!

वे उसी हालत में होंगे कि उस से बड़ी एक (नई) मुसीबत के बारे में सुनेंगे, उनके पास एक तेज़ आवाज़ पहुंचेगी कि दज्जाल उनके पीछे उनके बच्चों के पास पहुँच गया है।

यह सुनते ही वे अपने हाथ में जो भी होगा सब कुछ फेंक कर आगे बढ़ेंगे और दस जासूस घुड़सवारों को आगे भेज देंगे।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) कहते हैं: निश्चित रूप से मुझे उनके नाम उनके पिताओं के नाम सहित पता हैं और उनके घोड़ों के रंग भी जानता हूँ।

वे पृथ्वी के पटल पर उस समय के सबसे अच्छे शूरवीर होंगे, या वे पृथ्वी के पटल पर उस समय के सबसे अच्छे शूरवीरों में से होंगे"। (सही मुस्लिम[(1)])

इस हदीस में प्यारे नबी (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) के कथन: "निश्चित रूप से मुझे उनके नाम उनके पिताओं के नाम सहित पता हैं और मैं उनके घोड़ों के रंग भी जानता हूँ", इसी प्रकार दूसरी हदीस में आप के कथन: "उस समय जबकि वो ग़नीमत (युद्ध के धन) को बांट रहे होंगे और अपनी तलवारें जैतून के पेड़ों में लटका रखी होंगी" से प्रमाणित होता है की अंतिम काल में युद्ध घोड़ों पर और तलवारों के द्वारा होगा।

लेकिन क्या युद्ध केवल इन्हीं दो साधनों से होगा या युद्ध के अन्य आधुनिक साधनों के साथ भी होगा? इसे अल्लाह के अलावा कोई नहीं जानता।

3 - अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने फ़रमाया: "जब दज्जाल बाहर आएगा तो ईमान वालों में से एक व्यक्ति उसकी ओर जाएगा, दज्जाल के सशस्त्र सिपाहियों से उसकी भेंट होगी, वे उससे पूछेंगे: तुम कहाँ जाना चाहते हो?

वह कहेगा: मैं उस व्यक्ति के पास जाना चाहता हूँ जिसका उद्भव हुआ है।

---

(1) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल के उद्भव के समय रूमियों का बढ़चढ़ कर युद्ध में हिस्सा लेना, संख्या (2899)।

अब वे उससे कहेंगे: क्या तुम हमारे प्रभु पर ईमान नहीं रखते हो?

वह कहेगा: हमारे रब में कोई छिपापन नहीं है[1]।

वो कहेंगे: इसे मार डालो।

फिर वे एक दूसरे से कहेंगे: क्या हमारे प्रभु ने तुम्हें अपनी आज्ञा के बिना किसी की हत्या करने से मना नहीं किया था?

फिर वे उसे दज्जाल के पास ले जाएंगे, जब मोमिन उसे देखेगा तो बोल उठेगा: हे लोगो! यही वह दज्जाल है जिसका अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने उल्लेख किया था।

दज्जाल के आदेश पर उसको पेट के बल बांध दिया जाएगा।

फिर दज्जाल कहेगा: इसे पकड़ो और इसके सिर को चोटिल कर दो, फिर मार के कारण उसका पेट और कमर चौड़ी हो जाएगी।

फिर दज्जाल कहेगा: क्या तुम मुझ पर ईमान नहीं लाओगे?

मोमिन कहेगा: तुम ही झूठे मसीह हो।

तब उसके बारे में आदेश दिया जाएगा और उसे आरी द्वारा बीच से चीरा जाएगा, यहाँ तक कि उसको दोनों टांगों के बीच से अलग कर दिया जाएगा, फिर दज्जाल दोनों टुकड़ों के बीच चल कर दिखाएगा, फिर उससे कहेगा: खड़े हो जाओ; तो वह सीधा खड़ा हो जाएगा।

फिर उससे कहेगा: क्या अब तुम मुझ पर ईमान लाते हो?

वह कहेगा: "अब तो तेरे बारे में मेरी अंतर्दृष्टि और बढ़ गई है, फिर वह कहेगा: हे लोगो! यह (दज्जाल) मेरे बाद किसी और व्यक्ति के साथ ऐसा नहीं कर पाएगा।

फिर दज्जाल उसका गला काटने हेतु उसे पकड़ेगा, मगर उसकी गर्दन से लेकर हंसली की हड्डी तक का भाग तांबे का बना दिया जाएगा, अत: वह उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा।

फिर दज्जाल उसके दोनों हाथ पांव पकड़ कर फेंक देगा, लोग सोचेंगे कि दज्जाल ने उसे आग में फेंका है, जबकि (वास्तव में वह) स्वर्ग में डाला गया होगा।

---

(1) अर्थात: हमारे रब का मामला स्पष्ट है, वो काना नहीं है।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "यह व्यक्ति संसार के प्रभु के सामने सबसे महान गवाह होगा"। (सही मुस्लिम[1])

4 – दज्जाल के विषय में अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "अतः वह मदीने के निकट खारी भूमि के एक भाग पर पहुँचेगा, फिर उस दिन एक सबसे श्रेष्ठ - या सबसे श्रेष्ठ लोगों में से एक - पुरुष उसके पास जाएगा और उससे कहेगा कि मैं गवाही देता हूँ कि तू वही दज्जाल है जिसकी भविष्यवाणी अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति व दया हो) ने हमें की है।

दज्जाल कहेगा: लोगो! बताओ, अगर मैं इसे मार डालूँ और पुनर्जीवित कर दूँ; तो क्या तुम्हारे मन में मेरे विषय में कुछ सन्देह रहेगा?

उसके आस-पास के लोग कहेंगे: नहीं, अतः वह उस आदमी को मार डालेगा और फिर उसे जीवित भी कर देगा।

जीवित होते ही वह कहेगा कि अल्लाह की क़सम! अब से पहले उझे तेरे विषय में कभी इतनी अधिक अंतर्दृष्टि प्राप्त नहीं हुई थी।

फिर दज्जाल उसे दोबारा मारना चाहेगा, लेकिन इस बार वह उसके काबू में नहीं आएगा"। (सही बुखारी व सही मुस्लिम[2])

❋❋❋

(1) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल के लक्षण, उस पर मदीने का वर्जित होना और उसका मोमिन व्यक्ति को मारना व पुनर्जीवित करना, संख्या (2938), अबू-सईद खुदरी (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(2) सही बुखारी, पुस्तक: फितने, अध्याय: दज्जाल मदीने में प्रवेश नहीं करेगा, संख्या (7132), व सही मुस्लिम, पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल के लक्षण, उस पर मदीने का वर्जित होना और उसका मोमिन व्यक्ति को मारना व पुनर्जीवित करना, संख्या (2938), श्री अबू-सईद खुदरी (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

पृथ्वी में मसीह दज्जाल के भ्रमण की तीव्र गति

1 - मसीह दज्जाल पृथ्वी पर तेजी से चलेगा, प्यारे पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने उसके चलने की गति की तुलना आंधी के आगे चलने वाले बादलों की गति से की है।

श्री नव्वास बिन समआन (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहते हैं: "हमने कहा: हे अल्लाह के पैग़ंबर! ज़मीन में दज्जाल की गति क्या होगी? तो आपने फ़रमाया: उसकी गति आंधी के आगे चलने वाले बादल की तरह होगी"। (सही मुस्लिम[(1)])

2 - ज़मीन में उसके चलने की तीव्रता इतनी अधिक होगी कि वह चालीस दिनों के भीतर ही मक्का व मदीने को छोड़ कर हर बस्ती में पाड़ाओ कर जाएगा; दोनों नगर उस पर वर्जित होंगे।

अल्लाह के पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने - दज्जाल के विषय में श्री तमीम दारी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के कथन को वर्णन करते हुए – कहा:

(दज्जाल ने कहा) अब मैं तुम्हें अपने बारे में बताता हूँ: मैं ही मसीह हूँ, और जल्द ही मुझे निकलने की अनुमति मिल जाएगी, तब मैं बाहर निकलूँगा और ज़मीन पर भ्रमण करूंगा, चालीस दिनों के भीतर मक्का और मदीने के सिवा, किसी भी बस्ती को वहाँ पर उतरे बिना नहीं छोड़ुंगा, क्योंकि वे दोनों[(2)] मुझ पर वर्जित होंगे।

जब भी मैं उन दोनों में से किसी एक नगर में प्रवेश करना चाहूँगा तो एक फ़रिश्ता हाथ में नंगी तलवार लिए मेरे सामने आ खड़ा होगा और वह मुझे वहाँ जाने से रोकेगा, नगर के प्रत्येक द्वार पर फ़रिश्ते होंगे जो पहरा दे रहे होंगे"। (सही मुस्लिम[(3)])

श्री इब्ने-कसीर (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "वह (अर्थात: दज्जाल) इतना

---

(1) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल, उसके लक्षण और उसके साथ जो होगा उसका उल्लेख, संख्या (2937)।

(2) अर्थात: मक्का और मदीना।

(3) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: जस्सासा की कहानी, संख्या (2942), श्रीमती फ़ातिमा बिन्त क़ैस (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

निकट आ जाएगा कि एक-एक करके सभी राज्यों, किलों, क्षेत्रों और नगरों को प्राप्त कर लेगा और मक्का व मदीने के सिवा किसी भी नगर को अपने घुड़सवारों और प्यादों से रौंदे बिना नहीं छोड़ेगा"[1]।

❋❋❋

(1) अल-बिदाया व अल-निहाया (19/205)।

मसीह दज्जाल मक्का व मदीने में प्रवेश नहीं करेगा

मसीह दज्जाल धरती पर चलेगा और मक्का व मदीने को छोड़ कर धरती के सभी देशों में प्रवेश करेगा; क्योंकि वे दोनों महान नगर हैं, जिनमें प्रवेश करना उस के लिए अल्लाह की ओर से वर्जित कर दिया गया है।

* इस संबंध में हदीसों की व्याख्या इस प्रकार है:

1 - अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "मक्का और मदीने के सिवा ऐसी कोई बस्ती नहीं है जिसे दज्जाल नहीं रौंदेगा, उन दोनों के समस्त द्वारों पर फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध होकर पहरा दे रहे होंगे"। (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम[(1)])

2 - अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "मदीना फरिश्तों से घिरा हुआ है, और उसके हर द्वार पर दो फ़रिश्ते उसकी रक्षा कर रहे हैं, ताऊन (प्लेग) और दज्जाल उसमें प्रवेश नहीं कर सकते, जो कोई भी बुरे इरादे के साथ उसकी ओर आएगा अल्लाह उसे ऐसे ही घोल देगा जैसे पानी में नमक घुल जाता है"। (मुसनद अहमद[(2)])

3 - अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "मदीने के द्वारों पर फ़रिश्ते हैं, ताऊन (प्लेग) और दज्जाल उसमें प्रवेश नहीं कर सकते"। (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम[(3)])

❊❊❊

---

(1) सही बुख़ारी, पुस्तक: मदीने के गुण, अध्याय: दज्जाल मदीने में प्रवेश नहीं करेगा, संख्या (1881) व सही मुस्लिम, पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: जस्सासा की कहानी, (2943), श्री अनस बिन मालिक (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(2) संख्या (8373), श्री साद बिन मालिक और श्री अबू-हुरैरा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(3) सही बुख़ारी, पुस्तक: मदीने के गुण, अध्याय: दज्जाल मदीने में प्रवेश नहीं करेगा, संख्या (1880) व सही मुस्लिम, पुस्तक: हज, अध्याय: ताऊन और दज्जाल के प्रवेश से मदीने का संरक्षण, संख्या (1379), श्री अबू-हुरैरा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

मदीने में मसीह दज्जाल का आतंक प्रवेश नहीं करेगा

मदीने में स्थित ईमान वालों पर अल्लाह की एक कृपा यह है कि जब दज्जाल निकलेगा तो मदीने वाले ना घबराएंगे और ना उससे भयभीत ही होंगे, श्री अबू बकरह (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से वर्णित है कि प्यारे नबी (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने फ़रमाया: "मदीने में मसीह दज्जाल का आतंक प्रवेश नहीं करेगा, उस समय मदीने के सात द्वार होंगे, हर द्वार पर दो फ़रिश्ते होंगे"। (सही बुखारी[1])

जब दज्जाल – मदीने की करवट में - जुर्फ नामी स्थान पर उतरेगा तो मदीने में तीन बार भूकंप के झटके आएंगे; जिसके नतीजे में हर काफिर और मुनाफिक दज्जाल की ओर भाग निकलेगा, अल्लाह के पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने फ़रमाया: "दज्जाल एक खारी (बंजर) भूमि पर उतरेगा - और मुस्लिम के वर्णन में है: फिर वह जुर्फ[2] की खारी (बंजर) जगह पर पहुँच कर अपना तंबू लगाएगा - , फिर मदीना तीन बार कांप उठेगा; जिसके नतीजे में हर काफिर और मुनाफिक उसकी ओर भाग निकलेगा"। (सही बुखारी व सही मुस्लिम[3])

श्री इब्ने-हजर (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: प्यारे नबी का कथन "मदीना कांप उठेगा" का अर्थ यह है कि वहाँ पर एक के बाद दूसरा, फिर तीसरा भूकंप आएगा, यहाँ तक कि वहाँ से अपने ईमान में अशुद्ध हर व्यक्ति निकल जाएगा और वही लोग वहाँ बचेंगे जो शुद्ध मोमिन होंगे, तो उन्हें दज्जाल काबू में नहीं कर पाएगा।

इसमें और श्री अबू-बकरा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की हदीस कि "दज्जाल का आतंक मदीने में प्रवेश नहीं करेगा" में कोई टकराव नहीं है; क्योंकि यहाँ आतंक का तात्पर्य दज्जाल के ज़िक्र से उत्पन्न होने वाली घबराहट और उसके अत्याचार से पैदा होने वाला डर

---

(1) पुस्तक: मदीने के गुण, अध्याय: दज्जाल मदीने में प्रवेश नहीं करेगा, संख्या (1879)।

(2) जुरुफ़: मदीने का एक स्थान जो उहुद पर्वत के पश्चिम में स्तिथ है।

(3) सही बुखारी, पुस्तक: मदीने के गुण, अध्याय: दज्जाल मदीने में प्रवेश नहीं करेगा, संख्या (1881) व सही मुस्लिम, पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: जस्सासा की कहानी, (2943), श्री अनस बिन मालिक (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

है, ना कि भूकंप से आने वाला वह झटका जो हर अशुद्ध व्यक्ति को मदीने से निकालने के लिए होगा"[1]।

श्री कूरानी (अल्लाह उन पर दया करे) (मृत्यु 893 हिजरी) कहते हैं: "अगर तुम कहोगे कि जब मदीने में उसका आतंक ही प्रवेश नहीं करेगा तो फिर काफिर और मुनाफिक कैसे वहाँ से निकलेंगे, मैं कहूंगा: जो वहाँ से निकलेंगे वो भूकंप के डर से और दज्जाल के पास मौजूद जन्नत व खज़ाने के लालच में निकलेंगे"[2]।

❋❋❋

(1) फ़त्हु-ल-बारी (4/96)।

(2) अल-कौसर अल-जारी इला रियाज़ अहदीस अल-बुखारी (11/47)।

मदीने के निकट का वह स्थान जहाँ मसीह दज्जाल उतरेगा

जब मसीह दज्जाल निकलेगा तो उसका लक्ष्य और गंतव्य मदीना होगा, मगर वह उसमें प्रवेश नहीं कर पाएगा और न मक्का में ही प्रवेश कर पाएगा, हालांकि वह पृथ्वी के सभी नगरों में प्रवेश करेगा, प्यारे नबी (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "मक्का और मदीने को छोड़कर दज्जाल हर नगर को रौंदेगा"। (सही बुखारी व सही मुस्लिम[1])

फिर वह मदीने के पास, हरम की सीमाओं के बाहर, उहुद पर्वत के पीछे जुर्फ नामी खारी (बंजर) भूमि पर उतरेगा, फिर फ़रिश्ते उसका मुख शाम देश की ओर मोड़ देंगे और वहीं उसका अंत हो जाएगा।

जहाँ पर दज्जाल उतरेगा उस स्थान के वर्णन में हदीसें आई हैं, जो इस प्रकार हैं:

1 - वह मदीने के बग़ल में उतरेगा।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "यहाँ तक कि वह मदीने के किनारे पर उतरेगा"। (सही बुखारी)

2 - वह उहुद पर्वत के पीछे उतरेगा।

उहुद: मदीने के उत्तर में एक पर्वत है जो मस्जिद-ए-नबवी से 4 किमी दूर है।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "यहाँ तक कि वह उहुद पर्वत के पीछे उतरेगा"। (सही मुस्लिम)

3 - वह जुरुफ़ की खारी भूमी में उतरेगा।

जुरुफ़: उहुद पर्वत के पश्चिम में मदीने में एक जगह है।

सबखा (खारी भूमी): वह भूमि जो अपनी भूमि की लवणता के कारण कुछ उगा नहीं पाती।

---

(1) सही बुखारी, पुस्तक: मदीने के गुण, अध्याय: दज्जाल मदीने में प्रवेश नहीं करेगा, संख्या (1881) व सही मुस्लिम, पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: जस्सासा की कहानी, (2943), श्री अनस बिन मालिक (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "फिर वह जुरुफ़ की खरी भूमि में उतरेगा"। (सही मुस्लिम)

4 – फिर फ़रिश्ते उसका मुख शाम देश की ओर फेर देंगे।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "फिर फ़रिश्ते उसका मुख शाम देश की ओर फेर देंगे और वहीं उसका अंत हो जाएगा"। (सही मुस्लिम)

यहाँ तक कि वह उहुद पर्वत के पीछे उतरेगा

फिर फ़रिश्ते उसका मुख शाम देश की ओर फेर देंगे और वहीं उसका अंत हो जाएगा

"दज्जाल एक खारी (बंजर) भूमि पर उतरेगा - और मुस्लिम के वर्णन में है: फिर वह जुर्फ[1] की खारी (बंजर) जगह पर पहुँच कर अपना तंबू लगाएगा - , फिर मदीना तीन बार कांप उठेगा; जिसके नतीजे में हर काफिर और मुनाफिक उसकी ओर भाग निकलेगा"।

(1) जुरुफ़: मदीने का एक स्थान जो उहुद पर्वत के पश्चिम में स्तिथ है।

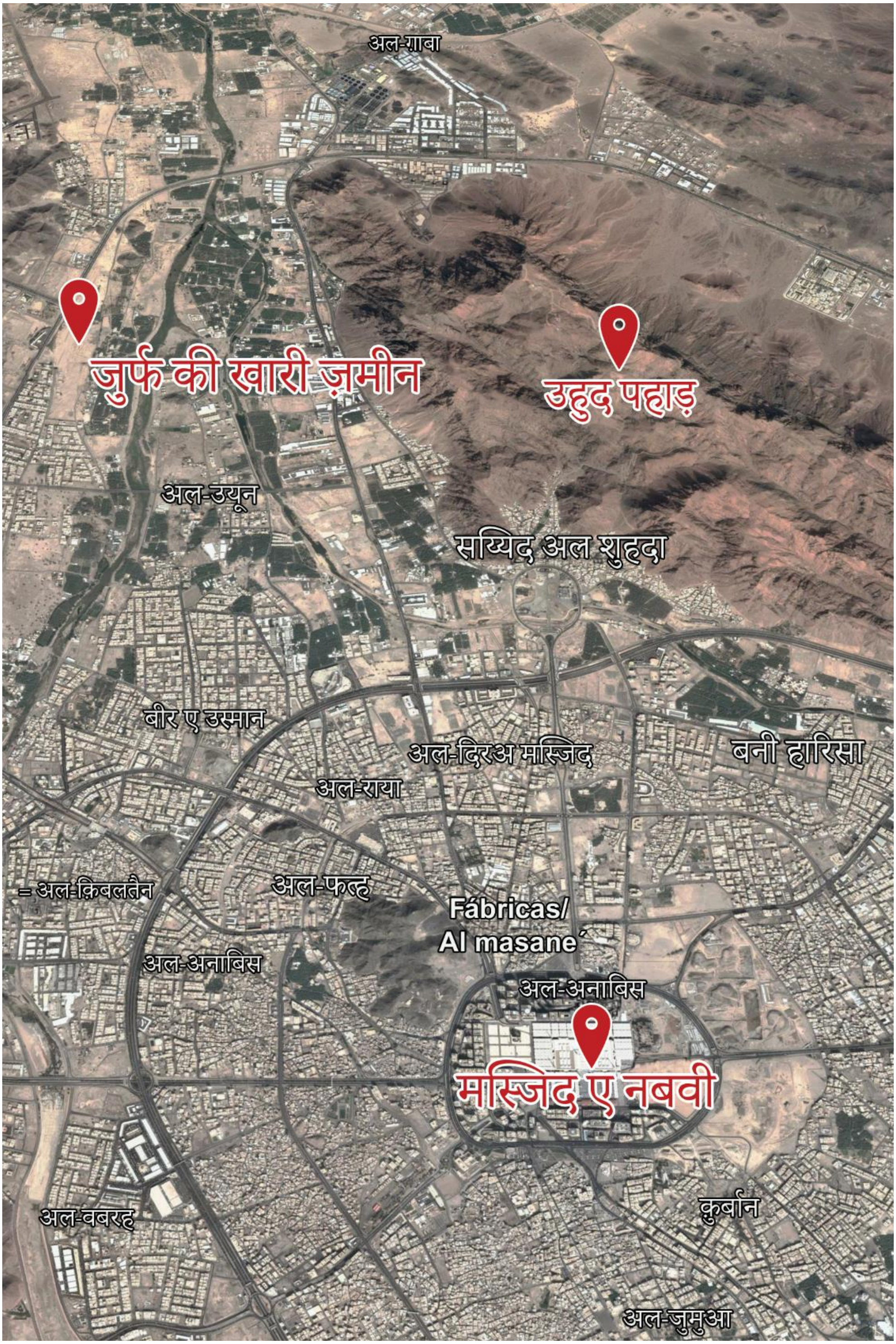
अल-ग़ाबा
ज़ुर्फ की खारी ज़मीन
उहुद पहाड़
अल-उयून
सय्यिद अल शुहदा
बीर ए उस्मान
अल-दिरअ मस्जिद
बनी हारिसा
अल-राया
= अल-क़िबलतैन
अल-फत्ह
Fábricas/
Al masane´
अल-अनाबिस
अल-अनाबिस
मस्जिद ए नबवी
अल-वबरह
क़ुर्बान
अल-ज़ुमुआ

लुद्द का द्वार
वेस्ट बैंक
ओमान
यरूशलेम
जॉर्डन
सकाका
तबुक
हर्गाहाडा
अल-उला
मदीना

*** इस विषय में वर्णित हदीसें निम्नलिखित हैं:**

1 - अल्लाह के पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया और शांति हो) ने फ़रमाया: "दज्जाल आएगा यहाँ तक कि मदीने के बग़ल में उतरेगा, फिर मदीना भूकंप के तीन झटकों से कांपेगा, जिसके नतीजे में हर काफिर और मुनाफिक उसकी ओर निकल भागेगा"। (सही बुखारी[(1)])

2 - प्यारे नबी (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने फ़रमाया: "मसीह दज्जाल पूर्व की ओर से आएगा, उसकी चिंता मदीना होगी, यहाँ तक कि वह उहुद पर्वत के पीछे उतरेगा, मगर फ़रिश्ते उसका मुख शाम देश की ओर मोड़ देंगे और वहीं[(2)] उसका अंत होगा"। (सही मुस्लिम[(3)])

3 - प्यारे नबी (उन पर अल्लाह की दया और शांति हो) ने फ़रमाया: "दज्जाल मक्का और मदीने के सिवा, किसी भी नगर को रौंदे बिना नहीं छोड़ेगा, इन दोनों नगरों के हर द्वार पर फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध होकर पहरा दे रहे होंगे, फिर वह खारी स्थान में उतरेगा - मुस्लिम के वर्णन में है: वह जुर्फ की खारी ज़मीन में उतरेगा - , फिर अपना तंबू लगाएगा, फिर मदीना भूकंप के तीन झटकों से कांपेगा, जिसके नतीजे में वहाँ से हर काफिर और मुनाफिक उसकी ओर निकल भागेगा"। (सही बुखारी व सही मुस्लिम[(4)])

❋❋❋

---

(1) पुस्तक: फ़ितने, अध्याय: दज्जाल का उल्लेख, संख्या (7124), श्री अनस बिन मालिक (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(2) अर्थात: शाम देश में।

(3) पुस्तक: हज, अध्याय: ताऊन और दज्जाल के प्रवेश से मदीने का संरक्षण, संख्या (1380), श्री अबू-हुरैरा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(4) सही बुखारी, पुस्तक: मदीने के गुण, अध्याय: दज्जाल मदीने में प्रवेश नहीं करेगा, संख्या (1881) व सही मुस्लिम, पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: जस्सासा की कहानी, (2943), श्री अनस बिन मालिक (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

धरती पर मसीह दज्जाल के रहने की अवधि

दज्जाल के महान फ़ितने के कारण ही सहाबा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) से धरती पर दज्जाल के रहने की अवधि के बारे में पूछा था: श्री नव्वास बिन समआन (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहते हैं: "हमने कहा: हे अल्लाह के दूत! धरती पर उसके रहने की अवधि क्या होगी?

आपने कहा: चालीस दिन, एक दिन एक वर्ष के समान होगा, दूसरा दिन एक महीने के समान होगा, तीसरा दिन एक सप्ताह के समान होगा और शेष दिन तुम्हारे दिनों के समान होंगे।

हमने कहा: हे अल्लाह के दूत! उस दिन में जो एक वर्ष के समान है, क्या एक दिन की नमाज़ हमारे लिए पर्याप्त होगी?

आपने कहा: नहीं, समय का अनुमान लगा लेना"। (सही मुस्लिम[1])

श्री इब्ने-कसीर (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "दज्जाल की औसत अवधि: एक वर्ष ढाई महीने है"[2]।

❋❋❋

(1) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल, उसके लक्षण और उसके साथ जो होगा उसका उल्लेख, संख्या (2937)।

(2) अल-बिदाया व अल-निहाया (19/205)।

मसीह दज्जाल का फ़ितना

मसीह-दज्जाल का फ़ितना महान होगा, उसके द्वारा अल्लाह अपने बंदों की परीक्षा लेगा; क्योंकि अल्लाह उसके काल में बहुत सी दृश्यमान असाधारण चीज़ें उसके साथ पैदा कर देगा और अपनी विशेष छमताओं में से बहुत सी चीजों पर उसे सक्षम बना देगा।

उन असाधारण घटनाओं में से कुछ निम्नलिखित हैं:

1 - उसके साथ दो बहती नदियाँ होंगी:

जिन में से एक को: देखने वाला सफेद पानी के रूप में देखेगा।

और दूसरी को: देखने वाला जलती हुई आग के रूप में देखेगा।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "दज्जाल के साथ क्या होगा मैं उसे उससे अधिक जानता हूँ, उसके साथ दो बहती नदियाँ होंगी:

एक: साधारण दृष्टि में सफेद पानी के रूप में होगी।

दूसरी: साधारण दृष्टि में भड़कती आग होगी"। (सही मुस्लिम)

2 - वह आकाश को वर्षा करने की आज्ञा देगा तो वह वर्षा करेगा और धरती को उपजाने की आज्ञा देगा तो वह उपजाएगी।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "फिर वह आकाश को वर्षा करने का आदेश देगा तो तो वह वर्षा करेगा और धरती को उपजाने की आज्ञा देगा तो वह उपजाएगी"। (सही मुस्लिम)

3 - जो लोग उस पर विश्वास करेंगे और उसकी बात मानेंगे: वह आकाश को उनके लिए वर्षा करने की आज्ञा देगा तो वह वर्षा करेगा और धरती को उनके लिए उपजाने की आज्ञा देगा तो वह उपजाएगी, फिर उनके पशु चरेंगे, संतृप्त होंगे तथा उनका दूध बहुत बढ़ जाएगा।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "तब वह लोगों के एक समूह के पास आएगा और उन्हें बुलाएगा, वे उस पर विश्वास करेंगे और उसका आज्ञापालन करेंगे, तब वह आकाश को आदेश देगा तो वह वर्षा करेगा और पृथ्वी को आदेश देगा तो वह उपजाएगी, फिर उनके मवेशी संध्या को ऐसे लौटेंगे कि उनकी पीठ सबसे अधिक उठी होगी,

उनके थन सबसे अधिक भरे होंगे और उनका पेट सबसे अधिक मोटा होगा"। (सही मुस्लिम)

4 - जो लोग उसका आज्ञापालन नहीं करेंगे और उसके आदेश का विरोध करेंगे: उन्हें अकाल, सूखा, कमी, पशुधन की मृत्यु, धन की कमी, जीवन और फलों की कमी से पीड़ित होना पड़ेगा।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "फिर वह लोगों के एक दूसरे समूह के पास आएगा और उन्हें अपनी ओर बुलाएगा तो लोग उसकी बात को ठुकरा देंगे, तो वह उनसे मुँह मोड़ लेगा, तो लोग सुबह में अकाल से पीड़ित होकर उठेंगे, उनके हाथ में कुछ भी धन नहीं होगा"। (सही मुस्लिम)

5 - धरती के खज़ाने उसके पीछे चलेंगे, अर्थात: धरती के दफ़ीने या उसके खनिज।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "वह खंडहर से गुजरेगा और उससे कहेगा: अपने खज़ाने बाहर निकाल, तो उसके खज़ाने मधुमक्खियों की तरह उसके पीछे चल पड़ेंगे"। (सही मुस्लिम)

.6 - वह एक पुरूष की हत्या करने के बाद उसे पुनर्जीवित करेगा, फिर अल्लाह उसे असक्षम देगा, अत: वह उस पुरूष की जिसको उसने मारने के बाद जीवित किया था, दोबारा हत्या नहीं कर पाएगा और न किसी अन्य की हत्या कर पाएगा।

अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने फ़रमाया: "फिर वह एक हट्टे-कट्टे जवान व्यक्ति को बुलाएगा और तलवार से सटीक वार करके उसके दो टुकड़े कर देगा, इन दोनों टुकड़ों के बीच एक तीर के गिरने की दूरी होगी, फिर वह उसे बुलाएगा; तो वह चमकते दमकते चहरे के साथ हँसता हुआ आ जाएगा"। (सही मुस्लिम)

श्री इब्ने-कसीर (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "दज्जाल प्रारंभ में एक अत्याचारी राजा के रूप में प्रकट होगा, फिर पैगंबरी (दूतत्व) का दावा करेगा, फिर प्रभुत्व का दावा करेगा, जिस पर आदम की सन्तान में से अज्ञानी, नीच व मूर्ख लोग उसका अनुसरण करेंगे, और जिन अच्छे बंदों को अल्लाह ने अपना मार्ग दिखाया है तथा अल्लाह के दल के पवित्र लोग उसका विरोध व खण्डन करेंगे"(1)।

श्री अल-ऐनी (अल्लाह उन पर दया करे) (मृत्यु 855 हिजरी) ने कहा: "दज्जाल के इन

(1) अल-बिदाया व अल-निहाया (19/205)।

असाधारण चीजों के साथ सशक्त होने की हिकमत (बुद्धिमत्ता): बंदों का परीक्षण करना है"[1]।

(1) उम्दतु-ल-क़ारी शर्ह सही अल-बुखारी (24/216)।

*** इस विषय में वर्णित हदीसों का उल्लेख इस प्रकार है:**

1 - अल्लाह के पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने फ़रमाया: "जब दज्जाल का उद्भव होगा तो उसके साथ पानी और आग होगी।

तो जिसे लोग आग समझ रहे होंगे वह शीतल जल होगा।

और जिसे शीतल जल समझ रहे होंगे वह जलाने वाली आग होगी।

- मुस्लिम ने एक वर्णन में इज़ाफ़ा किया है: तो तुम तबाह मत हो जाना –।

तो तुम में से जो उस समय को पाए उसे उस चीज़ में कूद जाना चाहिए जिसे वह आग समझ रहा होगा; क्योंकि वह मीठा शीतल जल होगा, - सही मुस्लिम के एक वर्णन में है: अच्छा मीठा (पानी) होगा- "। (सही बुखारी व सही मुस्लिम[(1)])

2 - अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "दज्जाल के साथ क्या होगा मैं उसे उससे अधिक जानता हूँ, उसके साथ दो बहती नदियाँ होंगी:

एक: साधारण दृष्टि में सफेद पानी के रूप में होगी।

दूसरी: साधारण दृष्टि में भड़कती आग होगी।

यदि कोई ऐसा समय पाए तो वह भड़कती आग की तरह दिखने वाली नदी के पास चला जाए और आंखें बंद करके सर झुका कर उसमें से पी ले; क्योंकि वह ठंडा पानी होगा"। (सही मुस्लिम[(2)])

3 - प्यारे नबी (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "तब वह लोगों के एक समूह के पास आएगा और उन्हें बुलाएगा, वे उस पर विश्वास करेंगे और उसका आज्ञापालन करेंगे, तब वह आकाश को आदेश देगा तो वह वर्षा करेगा और पृथ्वी को आदेश देगा तो वह उपजाएगी, फिर उनके मवेशी संध्या को ऐसे लौटेंगे कि उनकी पीठ सबसे अधिक उठी होगी, उनके थन सबसे अधिक भरे होंगे और उनका पेट सबसे अधिक मोटा होगा।

---

(1) सही बुखारी, पुस्तक: नबियों की हदीसें, अध्याय: जो बनी-इसराईल के विषय में उल्लेख किया गया है, संख्या (3450), व सही मुस्लिम, पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल, उसके लक्षण और उसके साथ जो होगा उसका उल्लेख, संख्या (2935), श्री हूज़ैफ़ा बिन यमान (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(2) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल, उसके लक्षण और उसके साथ जो होगा उसका उल्लेख, संख्या (2934), श्री हूज़ैफ़ा बिन यमान (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

फिर वह लोगों के एक दूसरे समूह के पास आएगा और उन्हें अपनी ओर बुलाएगा तो लोग उसकी बात को ठुकरा देंगे, तो वह उनसे मुँह मोड़ लेगा, तो लोग सुबह में अकाल से पीड़ित होकर उठेंगे, उनके हाथ में कुछ भी धन नहीं होगा।

वह खंडहर से गुज़रेगा और उससे कहेगा: अपने खज़ाने बाहर निकाल, तो उसके खज़ाने मधुमक्खियों की तरह उसके पीछे चल पड़ेंगे।

फिर वह एक हट्टे-कट्टे युवक को बुलाएगा और तलवार से सटीक वार करके उसके दो टुकड़े कर देगा, इन दोनों टुकड़ों के बीच एक तीर के गिरने की दूरी होगी, फिर वह उसे बुलाएगा; तो वह चमकते दमकते चहरे के साथ हँसता हुआ आ जाएगा"। (सही मुस्लिम[(1)])

❋❋❋

(1) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल, उसके लक्षण और उसके साथ जो होगा उसका उल्लेख, संख्या (2937), श्री नव्वास बिन समआन (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

मसीह दज्जाल के फ़ितने में हिकमत (बुद्धिमत्ता)

अंतिम समय में अल्लाह अपने बंदों के लिए एक परीक्षण के रूप में दज्जाल के उद्भव की आज्ञा देगा; ताकि ईमान वालों के ईमान में अपने उस यक़ीन के कारण वृद्धि हो जो उन्हें दज्जाल के प्रभु होने के झूठ को लेकर होगा, और ताकि दिलों के बीमार और अविश्वासी संदेह में पड़ जाएं, श्री इब्ने-कसीर (उन पर अल्लाह दया करे) ने कहा: "अल्लाह ने उस (दज्जाल) के हाथों पर बहुत से चमत्कार रचे हैं, जिनसे वह जिस प्राणी को चाहता है भटकाता है, लेकिन ईमान वाले उन चीज़ों के साथ भी जमे रहते हैं, बल्कि उनके ईमान के साथ अतिरिक्त ईमान की और हिदायत पर अतिरिक्त हिदायत की वृद्धि हो जाती है"[(1)]।

श्री मुग़ीरा बिन शो'बा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहते हैं: दज्जाल के बारे में प्यारे नबी (उन पर अल्लाह की दया हो शांति हो) से जितना प्रश्न मैंने किया उतना किसी ने नहीं किया, आपने कहा: वास्तव में तुम्हारा प्रश्न किस बात को लेकर है?

कहते हैं: मैंने कहा: लोगों का कहना है कि उसके साथ रोटी और मांस के पहाड़ होंगे और पानी की एक नदी भी होगी।

तो आपने फ़रमाया: वह अल्लाह के निकट इससे कहीं अधिक तुच्छ होगा"। (सही मुस्लिम[(2)])

श्री काज़ी इयाज़ (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "वह अल्लाह के निकट इस बात से कहीं अधिक तुच्छ होगा" कि अल्लाह उसके हाथ पर पैदा की गई चीज़ों को मोमिनों के लिए भटकने वाला और विश्वासियों के मन में संदेह पैदा करने वाला बनाए; बल्कि ऐसा इसलिए होगा ताकि ईमान वालों के ईमान में वृद्धि हो, और ताकि दिलों के बीमार और अविश्वासी संदेह में पड़ जाएं, जैसा कि उस व्यक्ति का कथन होगा जिसको दज्जाल हत्या करने के बाद दोबारा जीवित करेगा: "तुम्हारे बारे में जितनी बेहतर अंतर्दृष्टि मेरी अब है उतनी पहले कभी नहीं थी"।

"वह अल्लाह के निकट इससे कहीं अधिक तुच्छ है" का अर्थ यह नहीं कि उसके साथ

---

(1) अल-बिदाया व अल-निहाया (19/205)।

(2) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल अल्लाह के निकट बहुत अधिक तुच्छ होगा, (2939)।

इनमें से कुछ भी नहीं होगा, बल्कि अल्लाह के लिए वह इस बात से कहीं अधिक तुच्छ है कि वह उसे दज्जाल की सत्यता की निशानी बना देगा, यह कैसे हो सकता है! जबकि अल्लाह ने उसके झूठे और काफिर होने की निशानी को उस पठन के द्वारा प्रत्यक्ष बना दिया है जो अनपढ़ भी पढ़ लेगा, ये उसकी असत्यता पर उसके घटित (व नष्ट) तथा अपूर्ण होने जैसे प्रमाण के अलावा होगा"[1]।

❋❋❋

(1) इकमालु-ल-मूलिम (8/492)।

मसीह दज्जाल के अनुसरण का हुक्म[1]

मसीह दज्जाल का फ़ितना बहुत बड़ा है, अत: किसी को भी शरीर या जीभ के साथ उसका अनुसरण करने की अनुमति नहीं होगी, भले ही उसके मन में दज्जाल के झूठा होने का यक़ीन हो।

मुश्किल हालात और गंभीर ज़रूरत के कारण भी यह सोच कर उसका पालन करना जायज़ नहीं होगा कि उसके अनुसमर्थन में रियायत है, जैसा कि अन्य मामलों में होती है।

श्री अल-मुज़हिरी (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "प्यारे नबी के कथन: (आदम की रचना और क़यामत के घटित होने के बीच दज्जाल से बड़ा कोई मामला नहीं है) अर्थात: ऐसा उसके महान फ़ितने तथा उसकी भयानक विपत्ति के कारण है।

उसकी विपत्ति, उसके फ़ितने, और उम्मत के लिए उसके प्रति पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) के डर में, महान अल्लाह और उसके गुणों को जानने और मानने वाले मोमिन बंदों के मन में आने वाले किसी संदेह जैसी कोई बात नहीं थी।

ईमान वाले तो महान अल्लाह को इतना भली भांति जानते हैं कि उसको लेकर उनके दिल में कोई शक या उनके मन में कोई संदेह जगह नहीं बना सकता; क्योंकि महान अल्लाह किसी भी चीज़ के समान नहीं है और कोई भी चीज़ उसके समान नहीं है, उसके जैसा कुछ भी नहीं है...

बल्कि आप ने अपनी उम्मत को केवल इस बात से चेताया है कि दज्जाल का उद्भव एक कठिन समय और तनावपूर्ण परिस्थिति के दौरान होगा, लोग कठिनाइयों से ग्रसित होंगे, वह उनकी संपत्ति और पशुधन पर आधिपत्य प्राप्त कर लेगा, फिर लोगों के लिए अपने शरीर और अपनी जीभ से दज्जाल का अनुसरण करना अनुमेय प्रतीत होगा, भले ही वे अपने दिलों में उसके झूठ को जानते हों। जबकि महान ईश्वर के जैसा कुछ भी नहीं है।

और दज्जाल पर लोगों का विश्वास और उसका अनुसरण; अल्लाह के कथन

﴿إِلَّا مَنۡ أُكۡرِهَ وَقَلۡبُهُۥ مُطۡمَئِنُّۢ بِٱلۡإِيمَٰنِ﴾

(1) अर्थात: वैधानिक स्थान।

"उसे छोड़कर जो मजबूर है जबकि उसका दिल ईमान के साथ संतुष्ट है।" (अल-नह्ल: 106)

की अनुचित व्याख्या के आधार पर बचाव के बहाने होगा।

वे समझेंगे कि जैसे अन्य मामलों में अल्लाह की ओर से छूट होती है, दज्जाल के अनुसमर्थन के मामले में भी वैसी ही छूट है।

अत: जो उसका अनुसरण करेगा अल्लाह उसके दिल को फेर देगा, अल्लाह अपने प्रति उसके हृदय के विश्वास को स्वीकार न करेगा, न (इस अपराध का कोई) वैधानिक कारण मानकर उसे क्षमा करेगा, क्योंकि वर्णित कथनों में कहीं भी तक़िय्या (बचाव के बहाने) उसके अनुसरण की छूट नहीं आई है, तो इसी कारण से पैग़ंबर (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने अपने लोगों को चेतावनी दी और उनके बारे में दज्जाल के फ़ितने से डरते रहे...

इसी प्रकार जो लोग बचाव का बहाना बना कर मसीह दज्जाल के पास की चीज़ों के लोभ और उससे भयभीत होकर उस का अनुसरण करेंगे, अल्लाह अपने ऊपर ईमान लाने से उनके दिलों को दूर कर देगा, इस प्रकार वे कुफ़्र (अविश्वास) कर बैठेंगे।

यह बिल्कुल संभव है कि दज्जाल और उसके अनुयायियों का मामला उन निषेधों में से एक हो जिनके विषय में अल्लाह ने कठोरता से काम लिया है और जिनमें किसी भी प्रकार की छूट नहीं दी है, और यह कि जो भी उसका अनुसरण करेगा उसे अपने ईमान का कोई लाभ नहीं होगा, जैसे पश्चिम से सूर्य के उदय को एक ऐसा परीक्षण बनाया गया है जिसके बाद पहले से ईमान न लाने वाले व्यक्ति का ईमान स्वीकार नहीं किया जाएगा, भले ही वह ताकत, स्वास्थ्य और कर्म की संभावना में हो"[(1)]।

❋❋❋

(1) अल-मफ़ातीह फ़ी शरहि अल-मसाबीह (5/409-410)।

मसीह दज्जाल के विरुद्ध सबसे कठोर लोग

जब दज्जाल बाहर आएगा तो उसके विरुद्ध सबसे कठोर लोग बनी-तमीम[1] क़बीले के लोग होंगे, श्री अबू-हुरैरा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "जब से मैंने बनी-तमीम के बारे में अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) से तीन बातें सुनी हैं, तब से में उन से प्रेम करता रहा हूँ।

मैंने आपको कहते हुए सुना: वे लोग मेरी उम्मत में दज्जाल के लिए सबसे कठोर होंगे।

श्री अबू-हुरैरा ने कहा: जब बनी-तमीम की ज़कात आई तो प्यारे नबी (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने फ़रमाया: ये हमारी क़ौम की ज़कात है।

बनी-तमीम की एक दासी श्रीमती आइशा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के पास थी, तो प्यारे नबी (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने उनसे फ़रमाया: उसे आज़ाद कर दो; क्योंकि ये पैग़ंबर इस्माईल (उन पर शांति हो) की संतान में से है"। (सही बुखारी व सही मुस्लिम[2])

श्री इब्ने-हुबैरा (अल्लाह उन पर दया करे) (मृत्यु 560 हिजरी) ने कहा: "यह उन - अर्थात बनी-तमीम -, के साहस और अंतिम समय में उनके ईमान की दृढ़ता का प्रमाण है जबकि अन्य लोगों का ईमान डगमगा जाएगा"[3]।

❋❋❋

(1) अरब की एक बड़ी जनजाति, जिसका ठिकाना दहना और उत्तरी नज्द और यमामा में है।

(2) सही बुखारी, पुस्तक: दास आज़ाद करना, अध्याय: जो किसी अरबी दास का स्वामी हो और उसे भेंट कर दे या बेच दे, संख्या (2543), व सही मुस्लिम, पुस्तक: सहाबा के गुण, अध्याय: ग़िफ़ार, असलम, जूहैना, अशजा, मुज़ैना, तमीम, दौस और तैय क़बीलों के गुण, संख्या (2525)।

(3) अल-इफ़्साह अन मआनी अल-सिहाह (7/6)।

मसीह दज्जाल के फ़ितने से बचाव के साधन

मसीह दज्जाल का फ़ितना महान है, महान अल्लाह की विशेष सहायता के बाद निम्नलिखित साधनों द्वारा उससे मुक्ति प्राप्त की जा सकती है:

1 - इस्लाम को दृढ़तापूर्वक थामना, अपने आप को ईमान से लैस करना और अल्लाह के सुंदर नामों और गुणों को जानना; क्यूँकि मसीह दज्जाल काना होगा, जबकि महान प्रभु काना नहीं है।

2 - मसीह दज्जाल के फ़ितने से अल्लाह की शरण माँगना।

श्रीमती आइशा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहती हैं: "अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की दया और शांति हो) ये दुआ करते थेः ऐ अल्लाह! आग के फ़ितने और आग की यातना से।

क़ब्र के फ़ितने और उसकी यातना से।

अमीरी के फ़ितने की बुराई से और ग़रीबी के फ़ितने की बुराई से मैं तेरी शरण माँगता हूँ।

और मसीह दज्जाल के फ़ितने की बुराई से भी तेरी शरण माँगता हूँ"। (सही बुखारी व सही मुस्लिम[1])

3 - सूरह अल-कहफ के आरंभ से या उसके अंत से दस आयतें याद करना।

अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "जो व्यक्ति सूरह अल-कहफ के आरंभ से दस आयतें याद करता है - और एक वर्णन में है: सूरह अल-कहफ के अंत से -; वह मसीह-दज्जाल से सुरक्षित रहेगा"। (सही मुस्लिम[2])

4 - जो कोई मसीह दज्जाल के विषय में सुने, वह उस से दूर ही रहे और उसके पास न

---

(1) सही बुखारी, पुस्तक: दुआएं, अध्याय: ग़रीबी के फ़ितने से अल्लाह की शरण माँगना, संख्या (6377), व सही मुस्लिम, पुस्तक: ज़िक्र, दुआ, तौबा और छमा-याचना, अध्याय: फ़ितने और अन्य चीज़ों से अल्लाह की शरण माँगना, संख्या (589)।

(2) पुस्तक: यात्रियों की नमाज़ और उसको छोटा करके पढ़ना, अध्याय: सूरह अल-कहफ और कुर्सी वाली आयत के गुण, संख्या (809), श्री अबू-दर्दा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

आए; क्योंकि व्यक्ति उसके पास यह सोचकर चला तो जाएगा कि वह ईमान वाला है; लेकिन उसके साथ भेजे गए संदेहों के कारण वह भी उसका अनुसरण करने लगेगा।

अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने कहा: "जो कोई मसीह दज्जाल के बारे में सुने वह उससे दूर ही रहे, क्योंकि अल्लाह की कसम, व्यक्ति उसके पास यह सोचकर चला तो जाएगा कि वह ईमान वाला है; लेकिन उसके साथ भेजे गए संदेहों के कारण वह भी उसका अनुसरण करने लगेगा"। (सुनन अबू-दाऊद[(1)])

श्री अल-मुज़हिरी (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "यदि अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने पवित्र अल्लाह की क़सम खाकर पुष्टि की ह कि उनकी क़ौम के कुछ लोग दज्जाल का अनुसरण करेंगे, तो ऐसी स्तिथि में उचित हो जाता है कि जो उसके आने के बारे में सुने वह संव्य को उसके फ़ितने से सुरक्षित न समझे और उससे पूर्व पश्चिम के बीच की दूरी बना कर रखे; ताकि वह उस फ़ितने में न पड़े, क्योंकि वह फ़ितना बड़ा भयंकर होगा, बल्कि वह सबसे बड़ा फ़ितना होगा, जो एक बड़ी तादाद को नष्ट करके रख देगा, और सुरक्षित वही रहेगा जिसे पवित्र व महान अल्लाह सुरक्षा देगा"[(2)]।

5 - जो उसे पाएगा उसे चाहिए कि उस पर सूरह कह्फ़ की प्रारंभिक आयतें पढ़ दे।

श्री नव्वास बिन समआन (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहते हैं: "एक सुबह अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की दया व शांति हो) ने विस्तार के साथ दज्जाल की चर्चा की, और उसे इतना तुच्छ बताया और उसके फ़ितने को इतना भयानक दिखाया कि हमें लगने लगा वह यहीं कहीं खजूर के बाग़ के बग़ल में मौजूद होगा।

जब हम शाम में आपके पास आए, तो आपने हमारे ऊपर उसका स्पष्ट प्रभाव महसूस किया। अतः आप ने पूछा: क्या बात है?

हमने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल, आपने दज्जाल का ज़िक्र किया और उसे इतना तुच्छ बताया और उसके फ़ितने को इतना भयानक दिखाया कि हम समझने लगे वह यहीं कहीं खजूर के बाग़ के बग़ल में मौजूद होगा!

यह सुन आपने कहा: "तुम्हारे विषय में दज्जाल के अलावा अन्य फ़ितनों ने मुझे अधिक चिंता में डाल रखा है, (जहाँ तक दज्जाल की बात है) यदि वह मेरे जीवनकाल में ही निकलता

---

(1) पुस्तक: बड़ी घटनाएं, अध्याय: दज्जाल का निकलना, संख्या (4319), श्री इमरान बिन हुसैन (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।

(2) अल-मफ़ातीह फ़ी शरहि अल-मसाबीह (5/435)।

है, तो तुम्हारे स्थान पर मैं स्वयं उसका विरोधी हूँगा।

और यदि वह मेरे जाने के बाद निकलता है, तो हर व्यक्ति स्वयं उसका विरोधी होगा। और अल्लाह हर मुस्लिम के लिए मेरा उत्तराधिकारी[1]है।

वह बहुत घुँघराले बालों वाला एक जवान होगा और उसकी एक आँख उभरी हुई होगी[2], मानो, मैं उसे अब्दुल-उज़्ज़ा बिन क़तन[3] जैसा कह रहा हूँ।

तो तुम में से जो जो भी उसे पाएगा उसे चाहिए कि उस पर सूरह कह्फ़ की प्रारंभिक आयतें पढ़ दे"। (सही मुस्लिम[4])

श्री इब्ने-जौज़ी (अल्लाह उन पर दया करे) (मृत्यु 597 हिजरी) ने कहा: "जहाँ तक उसे अल-कह्फ़ की शुरुआती दस आयतों के रूप में निर्दिष्ट करने की बात है; तो इसमें जो ज्ञान हमें दिखाई देता है वह यह है कि:

महान प्रभु का कथन:

﴿لِّيُنذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا مِّن لَّدُنْهُ﴾

ताकि वह (अल्लाह की पुस्तक) एक कठोर आपदा से सावधान कर दे जो अल्लाह की ओर से आ पड़ेगी (अल-कह्फ़: 2)

मसीह-दज्जाल के बल को तोड़ देता है।

और प्रभु का कथन

﴿وَيُبَشِّرَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ٱلَّذِينَ يَعْمَلُونَ ٱلصَّٰلِحَٰتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ۝ مَّٰكِثِينَ فِيهِ أَبَدًا﴾

और ताकि वह (अल्लाह की पुस्तक) ईमान वाले जो अच्छे कर्म करते हैं उन्हें शुभ

(1) अर्थात: अल्लाह प्रत्येक मुस्लिम का संरक्षक और रक्षक है।

(2) अर्थात: उसकी रोशनी जा चुकी होगी।

(3) अर्थात: अब्दुल-उज़्ज़ा बिन क़तन बिन अम्र जाहिली खुज़ाई, उसकी माँ श्रीमती हाला बिन्त खुवैलद श्रीमती खदीजा बिन्त खुवैलद (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की बहन हैं।

(4) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: दज्जाल, उसके लक्षण और उसके साथ जो होगा उसका उल्लेख, संख्या (2937)।

सूचना दे दे कि उनके लिए अच्छा बदला है जिसमें वे सदैव रहेंगे।

दज्जाल के स्पष्ट आनंद और यातना के साथ सामने आने वाले फ़ितनों पर धैर्य को आसान बनाता है"(1)।

श्री अल-नववी (अल्लाह उन पर दया करे) (मृत्यु 676 हिजरी) ने कहा: "कहा गया है: इसका कारण सुरह के आरंभ में मौजूद करिश्मे और चमत्कार हैं, अतः जो भी उन पर विचार करेगा, वह दज्जाल के फ़ितने में नहीं पड़ेगा, यही बात सूरह के अंत में भी है"(2)।

❋❋❋

(1) कश्फ़ अल-मुश्किल (2/165)।

(2) श्रह अल-नववी अला मुस्लिम (6/93)।

मसीह दज्जाल का वध

धरती पर एक महान फ़ितने के बाद पैग़ंबर ईसा मसीह बिन मरयम (उन पर शांति हो) दिमश्क़ में सफ़ेद मीनार के पास उतरेंगे, फिर दज्जाल का वध करेंगे, प्यारे नबी (उन पर अल्लाह की दया वह शांति हो) ने फ़रमाया: "इसी दौरान कि वे युद्ध की तैयारी हेतु पंक्तियों को सीधा कर रहे होंगे, नमाज़ खड़ी हो जाएगी, उसी समय पैग़ंबर ईसा मसीह (उन पर शांति हो) उतरेंगे, फिर वह उनका रुख करेंगे, जब अल्लाह का शत्रु दज्जाल उन्हें देख लेगा, तो वह ऐसे पिघलने लगेगा जैसे पानी में नमक पिघल जाता है, यदि वह (पैग़ंबर ईसा) उसे छोड़ भी दें तो भी वह पिघल कर नष्ट हो जाएगा, लेकिन अल्लाह उनके हाथों से ही उसका वध कराएगा, और वह लोगों को अपने हथियार पर दज्जाल का खून भी दिखाएंगे"। (सही मुस्लिम [1])

उसका वध श्री ईसा बिन मरयम (उन पर शांति हो) के हाथ से इसलिए होगा ताकि ईमान वालों के इस विश्वास में वृद्धि हो जाए कि वह दज्जाल ही था।

वह फ़िलिस्तीन में बैतुल-मक़दिस (यरूशलेम) से पचास किमी दूर उत्तर-पश्चिम में लुद्द नगर के द्वार पर मारा जाएगा, अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया और शांति हो) ने कहा: "ईसा बिन मरयम (उन पर शांति हो) लुद्द नगर के द्वार पर दज्जाल का वध करेंगे"। (सुनन तिर्मिज़ी[2])

श्री इब्ने-कसीर (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "मार्गदर्शन के मसीहा श्री ईसा बिन मरयम (उन पर शांति हो) गुमराही वाले मसीहा मसीह-दज्जाल के समय - दमिश्क में पूर्वी मीनार पर उतरेंगे, तो ईमान वाले उनके चारों ओर जमावड़ा लगा लेंगे और अल्लाह के परहेज़गार बंदे उनके साथ मुड़ेंगे, फिर वह उन्हें लेकर दज्जाल की ओर चल पड़ेंगे, जबकि दज्जाल बैतुल-मक़दिस (यरूशलेम) की ओर बढ़ रहा होगा।

फिर श्री ईसा मसीह अफीक़ की घाटी[3] पर दज्जाल को जा पकड़ेंगे और दज्जाल उन

---

(1) पुस्तक: फ़ितने और क़यामत की निशानियाँ, अध्याय: कुस्तंतीनिय्या की विजय, दज्जाल का निकलना और ईसा बिन मरयम का उतरना, संख्या (2897), श्री अबू-हुरैरा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।
(2) पुस्तक: फ़ितने, अध्याय: जो कुछ श्री ईसा बिन मरयम द्वारा दज्जाल के वध के विषय में आया है, संख्या (2244), श्री मुजम्मा बिन जरिया अंसारी (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) की हदीस।
(3) अफ़ीक़ घाटी: तबरिया झील के पूर्व में स्थित है, जो वहाँ से 5 किमी दूर है।

से हार जाएगा, वो (ईसा मसीह) लुद्द नगर के द्वार पर उससे भिड़ेंगे और जब वह उसमें प्रवेश कर रहा होगा तब वह अपने भाले से उसे मार डालेंगे, और उस से कहेंगे: मैं तुम पर एक अचूक प्रहार करके ही दम लूँगा।

जब दज्जाल उनका सामना करेगा तो पानी में नमक की भाँति घुलने लगेगा, फिर वह उसे लुद्द नगर के द्वार पर जा पकड़ेंगे, फिर वहीं पर उसकी मृत्यु हो जाएगी"[1]।

❋❋❋

(1) अल-बिदाया व अल-निहाया (19-206)।

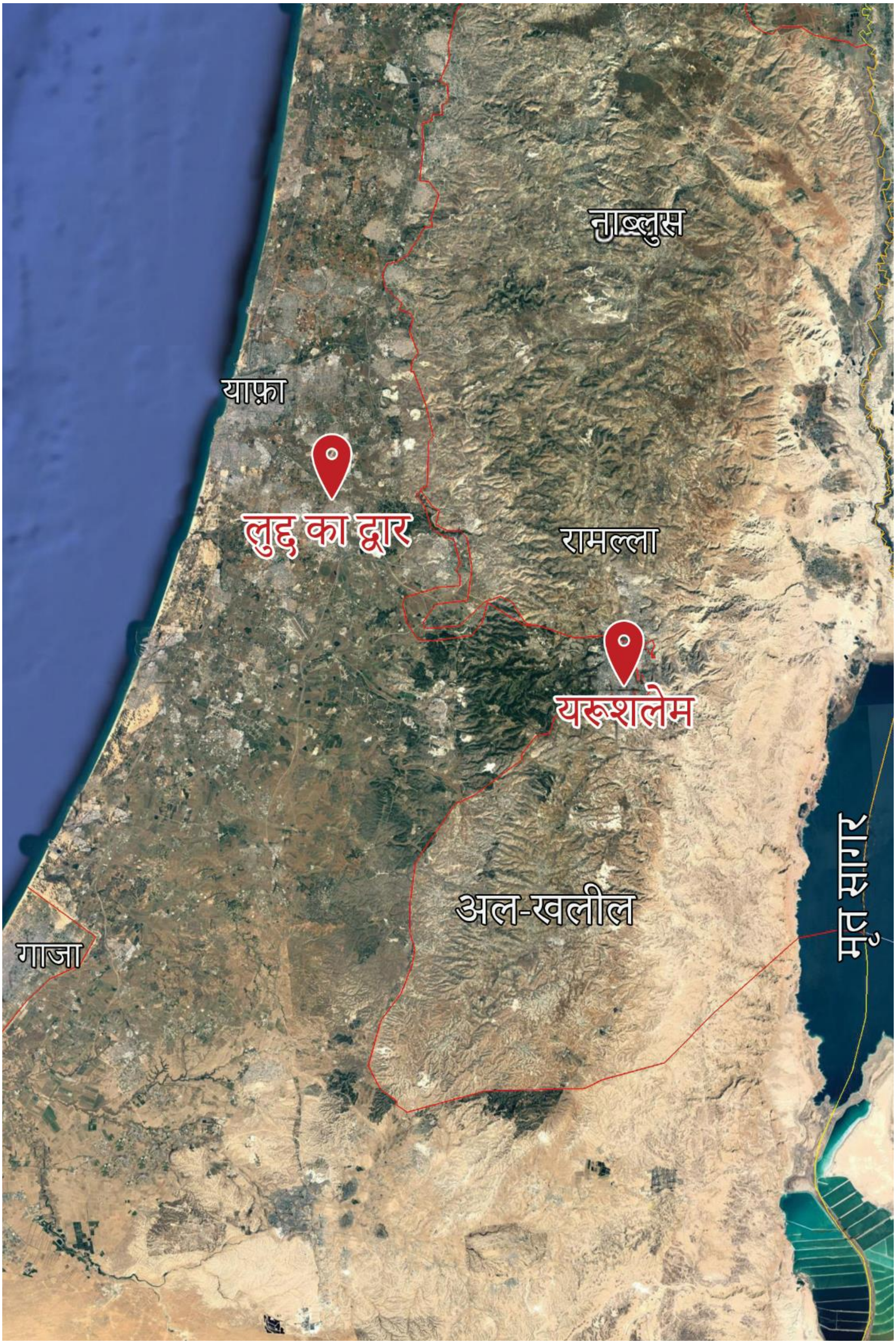
नाब्लुस
याफ़ा
लुद्द का द्वार
रामल्ला
यरूशलेम
मृत सागर
अल-खलील
गाजा

दज्जाल के विषय की हदीसों में वर्णित स्थानों के विश्लेषक मानचित्र

संलग्न लिंक में दज्जाल की हदीसों में उल्लेखित स्थानों के समकालीन मानचित्रों पर विश्लेषण और व्याख्यात्मक विवरण है:

a-alqasim.com/addajjaal/

हम अल्लाह से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें मसीह-दज्जाल के फ़ितने से अपनी शरण में रखे, हमें स्पष्ट तथा छिपे हर प्रकार के फितनों से अपनी शरण में रखे और हमें मुस्लिम के रूप में मृत्यु दे।

अल्लाह की दया और शांति हमारे पैग़ंबर मुहम्मद पर, तथा उनके परिवार और उनके सभी साथियों पर बनी रहे।

❊❊❊

विषयसूची

प्रस्तावना....................5
पुस्तक की रूपरेखा....................7
मसीह दज्जाल का नाम....................9
मसीह दज्जाल नाम रखने का कारण....................11
मसीह दज्जाल के विषय में हदीसों की प्रमाणिकता....................12
मसीह दज्जाल कयामत के बड़े संकेतों में से एक है....................14
मसीह-दज्जाल के विरुद्ध चेतावनी....................15
सहाबा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) का मसीह दज्जाल के फ़ितने से डरना....................18
मसीह-दज्जाल के लक्षण....................20
मसीह दज्जाल का सच....................27
मसीह दज्जाल की दुर्बलता....................28
मसीह दज्जाल की वर्तमान स्थिति....................30
मसीह दज्जाल के उद्भव के संकेत....................31
मसीह दज्जाल कब निकलेगा?....................43
मसीह दज्जाल के उद्भव का कारण....................46
मसीह दज्जाल के उद्भव का स्थान....................47
मसीह दज्जाल के उद्भव के समय लोगों की स्थिति....................56
पृथ्वी में मसीह दज्जाल के भ्रमण की तीव्र गति....................61
मसीह दज्जाल मक्का व मदीने में प्रवेश नहीं करेगा....................63
मदीने में मसीह दज्जाल का आतंक प्रवेश नहीं करेगा....................64
मदीने के निकट का वह स्थान जहाँ मसीह दज्जाल उतरेगा....................66
धरती पर मसीह दज्जाल के रहने की अवधि....................71
मसीह दज्जाल का फ़ितना....................72
मसीह दज्जाल के फ़ितने में हिकमत (बुद्धिमत्ता)....................77
मसीह दज्जाल के अनुसरण का हुक्म()....................79
मसीह दज्जाल के विरुद्ध सबसे कठोर लोग....................81
मसीह दज्जाल के फ़ितने से बचाव के साधन....................82

मसीह दज्जाल का वध 86
दज्जाल के विषय की हदीसों में वर्णित स्थानों के विश्लेषक मानचित्र 89
विषयसूची 90

मुअस्ससा तलिबिल-इल्म
लिन्नशर वत्तउज़ी
00966506090448

أحاديث الدجال في السنة النبوية

مترجم بالهندية

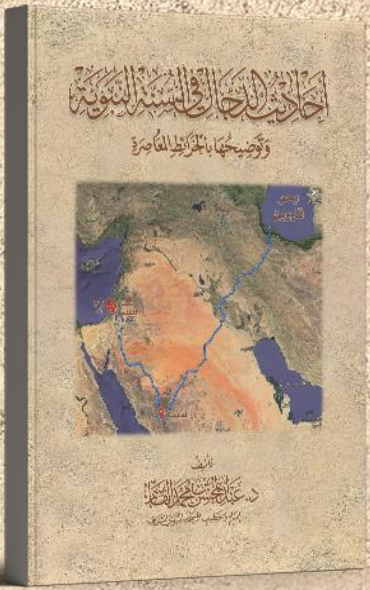

हमारे कुछ और प्रकाशन

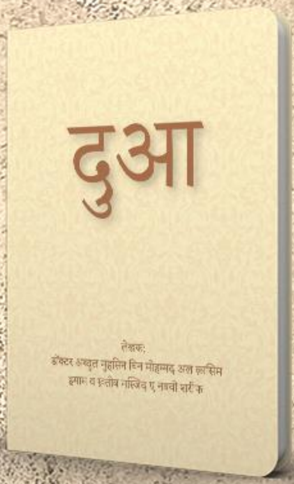

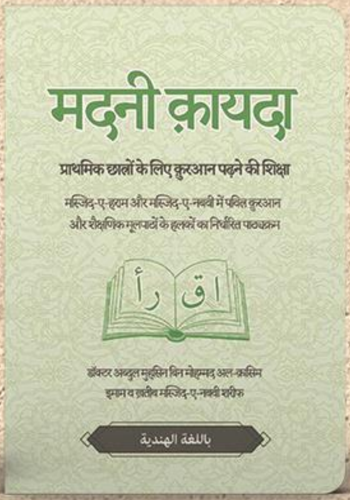

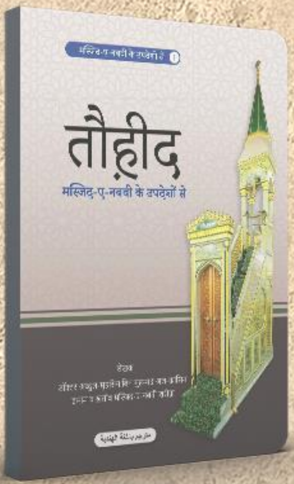

a-alqasim.com
FawaidAlQasim